।। सत्तस्वरूप आनंदपद ने:अछर निझनांव ।।

मारवाडी + हिन्दी

(१-१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना-रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सत्त स्वरूप, आनंद पद, ने:अछर, निझ नांव लिखंते ||

|| चोपाई ||

भेद सहेत ग्यान घट आवे, प्रेम भाव न्हेचो मन पावे ।
मोख मिलण की येहे उपाई, दूजी नही सिष्ट मे भाई || १ ||

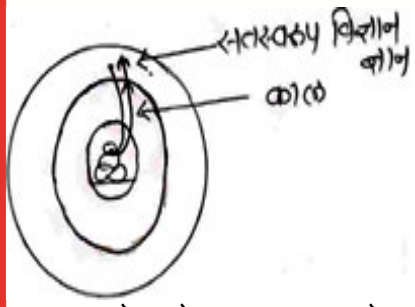

काल से मुक्त करानेवाला भेद यानेही सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान हंसके घटमे प्रगट हुवा तो ही हंस काल से मुक्त होता याने हंस को मोक्ष मिलता । त्रिगुणी माया की विधीयाँ साधने से,जीव यह ब्रम्ह है ऐसा ब्रम्हज्ञान प्रगट करने से या पारब्रम्ह का ब्रम्हज्ञान प्रगट करने से जीव काल के मुख मे ही रहता । काल के परे महासुख के मोक्ष पद मे नही जाता । इसलिये सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान विधी छोड्कर दुजी सभी या कोई भी विधी साधने से हंस मोक्षमे नही जाता । सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान विधी प्रगट होगी तो ही हंसको सतस्वरुप साहेब से कुद्रती प्रेम और भाव आता । जबतक घट मे सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान प्रगट नही होता तबतक हंस को सतस्वरुप साहेब के प्रती कितनी भी कोशीश किया तो भी कुद्रती प्रेमभाव नही आता । ऐसेही जबतक हंस मे सतस्वरुप विज्ञान प्रगट नही होता । तबतक हंस के निजमन मे काल से छुटा यह भय नही जाता । जब हंस मे सतस्वरुप विज्ञान प्रगट होता तब ही हसंके निजमन मे कालसे छुटा यह सदाके लिये जाता और हंस सदाके लिये काल से भयमुक्त ऐसा निश्चिंत होके निकल जाता ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी तथा नर–नारी को समजा रहे है ।।।१।।

ओ तो जीव ब्रम्ह सुण होई, याकुं पकड़ सके नहिं कोई ।
सब ही क्रम जीव इण साया, सुख के काज जक्त हुवो भाया || २ ||

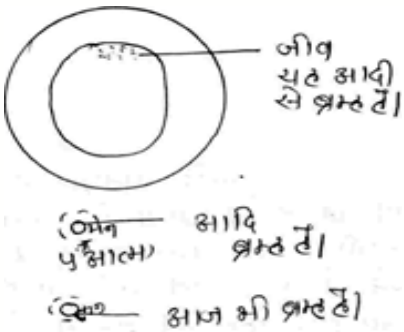

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके मायावी ज्ञानीयो को, ब्रम्हज्ञानीयो को तथा जगत के लोगो को कह रहे है कि,जीव आदी मे ब्रम्ह था और आज भी ब्रम्ह है । यह ब्रम्ह है इसलिये इसे त्रिगुणीमाया के कर्म पकड नही सकते । जीव कर्म करेगा तो ही कर्म होगे और यह जीव कर्म नही करेगा तो कर्म नही होगे इसप्रकार त्रिगुणीमाया के सभी कर्म जीव के आसरे है । जीव को होनकाल पारब्रम्ह मे सुख नही थे । इसलिये यह जीव त्रिगुणीमाया के सुख लेने के लिये निचे त्रिगुणीमाया के जगत मे आया और सुखो के लिये त्रिगुणीमाया के कर्म किये । ।२।

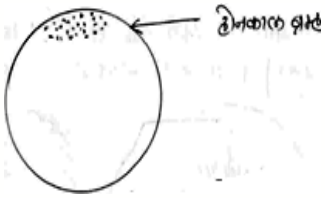

ब्रम्ह जहाँ सुण सुख दु:ख नाही, लेणा अेक न देणा कांही ।
तां कारण ओ खेल बणायो, पांच भूत कर संग हुय आयो || ३ ||

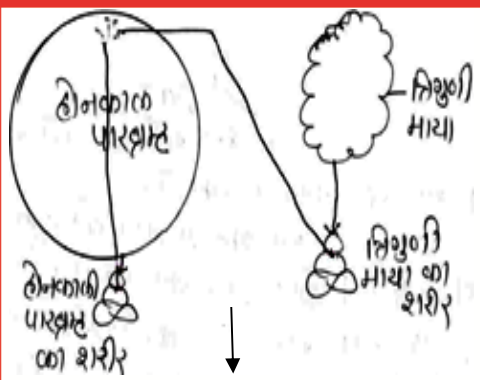

शिवब्रम्ह
↓
चिदानंद ब्रम्ह
↓
महतत्व
↓
शक्ती,आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी,
ब्रम्हा,विष्णु,महादेव व
शक्तीसे लक्ष्मी,सरस्वती,गौरी,
५ तत्व का नर-नारीका शरीर।

यह जीव आदी में जहाँ रह रहा था वह होनकाल ब्रम्ह है । उस ब्रम्ह मे जीव को सुख तथा दु:ख नही थे । कोई प्रकार का किसीसे लेना नही था तथा कोई प्रकार का किसीको देना नही था । जीवब्रम्ह के साथ मन तथा पाँच आत्मा ऐसी माया थी । इस जीव को तथा इसके मन को पाँच आत्मा से वासना के सुख चाहिये थे । पाँच आत्मा जबतक पूर्ण देह रुप नही धारती जबतक जीव के साथ पाँच आत्मा होते हुये भी जीव को सुख नही मिल रहे थे । इसलिये जीवने होनकाली शरीर धारण करके त्रिगुणीमाया को संग कर पाँच आत्मा के आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी ऐसे पाँच प्रकार के तत्व तयार किये । उसका घट बनाया और उसमे वह पाँच वासना के सुख लेने के लिये बिराजमान हुवा । ऐसा इसी जीव ने ही खेल बनाया ।।।३।।

।। कुण्डलियाँ ।।

ग्यानी सबही सांभळो, जीव क्हो कुण होय ।
किसा लोक सुँ आवीयो, सोझ बतावो मोय ।।
सोध बतावो मोय, उलट क्हाँ लग गया भाई ।
ब्होर न जनमे आय, क्हां लग पुंगा जाई ।।
सुखराम केहे वां दोड कहो, कुण बळ पुगे कोय ।
ग्यानी सब ही सांभळो, जीव कहो कुण होय ।। १ ।।

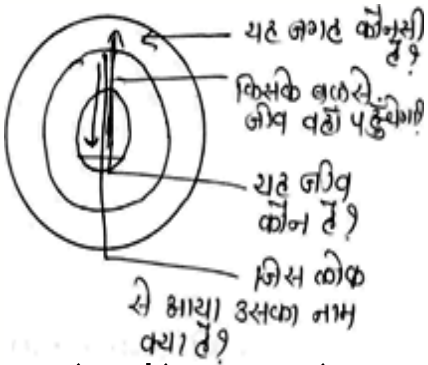

सभी ज्ञानीयो सुनो,ये जीव कौन है?कौनसे लोक से आया है ? यह खोज करके बतावो और पारब्रम्हसे जैसे निचे आया वैसे मायाके लोकसे उलटकर उपर कहाँ पहुँचने पे वह मायामे पुन:जनम नही लेगा वह जगह बतावो । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी मायाके ज्ञानी तथा ब्रम्हज्ञानीयोको कहते है उस जगह पहुँचनेकी विधी बतावो । और किसके बल पे पहुँचेगा यह खोजकर बतावो।।१।।

जीव ब्रम्ह सूं आवियो ।। जीव ब्रम्ह ही होय ।।
तो फिर आसी जाय कर ।। तामे फेर न कोय ।।
ता मे फेर न कोय ।। जीव ओ साहेब होई ।।

तो फिर आसी जाय ।। रीत आदू कहुँ तोई ।।
सुखराम आद घर पूंचिंया ।। निर्भे किस बिध होय ।।
जो पेली सुं आवियो ।। तो अब किंऊ नही आवे जोय ।।२।।

जीव ब्रम्ह सूं आवियो–यहाँ ब्रम्ह याने पूर्ण वैरागी मायारहीत,ज्ञानरुप ऐसा ज्ञानी समजते । होनकाल ब्रम्ह नही समझते । माया से पूर्ण मुक्त है ऐसा समजते । ब्रम्हज्ञानीयो ने आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज को जबाब दिया कि,जीव यह ब्रम्ह है तथा वह मायारहीत ब्रम्ह से आया है । उसपर आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानीयो से बोले की,जीव यह ब्रम्ह है वह ब्रम्ह मे जाना चाहते हो । जब वह पहले आया वैसेही फिर वही जायेगा तो फिर वापीस निचे वह त्रिगुणीमाया मे आयेगा इसमे फेरफार याने अंतर मन समझो । ज्ञानीयो ने आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज को जवाब दिया कि पहले वह ब्रम्ह था,अभी वह जीव है और ब्रम्हज्ञान से वह ब्रम्ह के समान साहेब बनेगा और साहेब बनने पे वह नही आयेगा ।

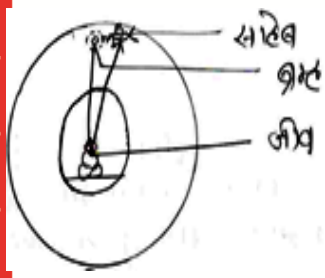

साहेब बनेगा याने क्या ?

पारब्रम्हमे जीव का जीवब्रम्ह स्वभाव था । माया मे आने के बाद मायावी स्वभाव का बना । ब्रम्ह की भक्ती करेगा तो वह मुल जीवब्रम्ह स्वभाव और माया मे पाये हुये माया स्वभाव से न्यारा होणकाल पारब्रम्ह साहेब स्वभाव का बनेगा । जैसे मुलब्रम्ह स्वभाव का जीव गर्भ में आता वैसे होनकाल पारब्रम्ह गर्भमें कभी नही आता । इसकारण साहेब बनने पे जीव गर्भमें नही आयेगा । ऐसी ब्रम्हज्ञानीयों की समझ है । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने ब्रम्हज्ञानी को कहा,वह होनकाल ब्रम्हके समान साहेब भी बन गया तो उसी जगह जायेगा,जहाँसे आदीसे आनेकी रीत है । इसलिये हे ब्रम्हज्ञानीयों आप आद घरमें पहुँच जाओगे परंतु आद घरसे पहलेसे ही आनेकी रीत है । तो अब वापीस वही जानेसे वह कैसे नही आयेगा । वह जरुर आयेगा । वहाँ से ब्रम्ह बनो या साहेब बनो त्रिगुणीमाया में आने की रीत है इसकारण वह त्रिगुणीमाया में आयेगा । वहाँ जाने पे कुछ दिन के लिये वहाँ रहेगा । जब तक वहाँ रहेगा तब तक काल नही खायेगा परंतु यहाँ त्रिगुणी माया में गर्भ में आते ही उसे काल समयनुसार खायेगा । ऐसा काल का डर उसे है,फिर वह निर्भय कैसे हुवा? यह बतावो ।।।२।।

ब्रम्ह अस्थिर कन स्थिर सदा ।। सुण ग्यानी क्हे मोय ।।
कर्णे हारो ब्रम्ह हे ।। कन माया क्हूं तोय ।।
कन माया कहुं तोय ।। अर्थ ओ सोझ बतावो ।।
के तज सब ही ग्यान ।। श्रण मेरी चल आवो ।।
सुखराम क्हे इण भेद बिन ।। मोख न पावे कोय ।।

ब्रम्ह अस्थिर कन थिर सदा ।। सुण ग्यानी क्हे मोय ।।३।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने ज्ञानीयो से पूछा की,हे ब्रम्ह ज्ञानीयो ब्रम्ह सदा स्थिर है कि अस्थिर है ? करनेवाला ब्रम्ह है या माया है यह ज्ञान खोजकर बतावो । यह ज्ञान तुम्हारे समज मे नही आता हो तो जो तुम्हारे पास ज्ञान के आधार है वे तज दो औंर मेरे कैवल्य ज्ञान के शरण चले आवो । ब्रम्ह सदा स्थिर है या सदा अस्थिर है यह भेद जबतक तुम्हे नही समजेगा तबतक मोक्ष नही पावोगे ।।।३।।

ब्रम्ह अखंडत थिर सदा ।। माया आवे जाय ।।
कर्णे हारो ब्रम्ह ही ।। और न दूजो माय ।।
और न दूजो माय ।। अरथ सुण ज्याँ ओ होई ।।
जे कसर या माहे ।। फेर कर कहिये मोई ।।
ग्यानी जन सुख देव कूं ।। कही उलट कऊं आय ।।
ब्रम्ह अखंडत स्थिर सदा ।। माया आवे जाय ।।४।।

ब्रम्ह अखंड्ति है,सदा है और स्थिर है । माया आती-जाती है । ब्रम्ह अखंड्ति,सदा स्थिर है फिर भी करनेहारा ब्रम्हही है । ब्रम्हके सिवा करनेवाला दुजा कोई नही है । ऐसे जवाब ज्ञानीयो ने आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजको दिया । तब आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने ज्ञानीयोसे कहाँ कि ब्रम्ह स्थिर है फिर भी वह करनेवाला है ऐसा तुम कहते हो तो वह करनेवाला मतलब कर्ता बना यह कसर उसमे है या नही यह मुझे खोजकर सोचके बतावो । ।।४।।

क्रता कहो स्थिर किम हुवे ।। नाभी कर्णे हार ।।
ओ किम लागे अर्थ रे ।। चौड़े कहे पुकार ।।
चौड़े केहे पुकार ।।अचळ सो ही जग माही ।।
ना क्रता ना केण ।। नाहे आवे कहुँ जाई ।।
सुखराम केहे ग्यानी सुणो ।। समझर करो बिचार ।।
कर्ता थिर क्हो किम हुवे ।। नावी कर्णे हार ।।५।।

अरे पारब्रम्ह के ब्रम्हज्ञानीयो जो कर्ता है,जिसका नाम ही कर्ता है वह स्थिर है यह ज्ञान की समजमे अर्थ कैसे बैठेगा?यह समजे ऐसा चौडे याने साफ साफ खुल्ला करके बतावो । अरे ज्ञानीयो,जो अकर्ता है वह अचल रहता वह कुछ करता नही तथा वह कही आता जाता नही यह समज तो सभी जगत,ज्ञानी,ध्यानी जानते है परंतु जो कर्ता है,कर्णेहार है वह अचल है । कुछ करता नही है,कही आता नही है तथा कही जाता नही है यह सही कैसे है यह समजकर विचार करके बोलो ।।।५।।

माया सोई क्रतार हे ।। माया आवे जाय ।।
माया माही जीते हारसी ।। माया धापे खाय ।।

माया धापे खाय ।। ब्रम्ह तो ने:चळ होई ।।
आनंद लेसो जाय ।। जीव माया कहुं तोई ।।
सुखराम कहे सब सांभळो ।। माया करे ऊपाय ।।
माया सो कर्तार हे ।। माया आवे जाय ।।६।।

जिसे तुम ब्रम्ह समजकर उत्पत्ती कर्तार कहते हो वह ब्रम्ह नही माया है । वही आती और वही जाती । वह माया ही जितती और वही माया ही मरती । वह माया ही धापती और वह माया ही खाती । ब्रम्ह तुम जिसे ब्रम्ह समजते वैसे उत्पत्ती नही करता । ब्रम्ह तुम जिसे ब्रम्ह समजे वैसा कही आती नही,कही जाता नही,कभी जितता नही,कभी हारता नही,कभी खाता नही,कभी धापता नही वह सदा निश्चल,अखंडीत रहता । माया का आनंद लेता वह जीव भी माया है यह तुम्ह बताता । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ब्रम्हज्ञानीयो को कहते है की,तुम सभी ध्यान देके सुनो माया के उपाय करती वह सब माया ही है,ब्रम्ह नही है । जनम लेती वह भी माया ही है । मरती वह भी माया ही है । सृष्टी उत्पत्ती करती यह भी माया ही है । ये कोई निश्चल ब्रम्ह नही है ।।।६।।

ब्रम्ह ब्रम्ह तम कर रहया ।। ब्रम्ह हुवा क्या होय ।।
ग्यानी ग्यान बिचार के ।। अर्थ बताओ मोय ।।
अरथ बताओ मोय ।। ब्रम्ह मे क्या सुख प्यारा ।।
कहो आणंद किस रीत ।। केम कोई लहे बिचारा ।।
सुखराम कहे कर न्याव रे ।। भिंन भिन्न कर कहो मोय ।।
ब्रम्ह ब्रम्ह तम के रहया ।। ब्रम्ह हुवां क्या होय ।।७।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हज्ञानीयो से पुछ रहे कि अरे ज्ञानीयो,ब्रम्ह ब्रम्ह तुम कह रहे हो,ब्रम्ह होने से क्या होगा?ब्रम्ह होने से ब्रम्ह मे जावोगे । ज्ञानीयो ज्ञान का बिचार करके मुझे बतावो की उस ब्रम्ह मे क्या सुख है जिसकारण ब्रम्ह तुम्हे प्यारा लग रहा । वहाँ आनंद किस रीत का है?वहाँ जानेके बाद जीव कैसे आनंद लेगा?यह न्याय करके भिन्न-भिन्न प्रकार से मुझे समजाकर कहो ।।।७।।

ब्रम्ह हुवा ज्यां दुख नही ।। ना सुख आणंद माय ।।
सुण ग्यानी म्हे भेद दूं ।। चौड़े दिष्टंग लाय ।।
चौड़े दिष्टंग लाय ।। नार बिन ज्यूं नर होई ।।
बिन बिभे बिन ख्याल ।। ग्यान से न्यारो कोई ।।
सुखराम राजा बिन फोज रे ।। ज्युँ राजा गढ जाय ।।
इऊँ ब्रम्ह हुवा ज्यां दुख नही ।। ना सुख आणंद माय ।।८।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने ब्रम्हज्ञानीयो को कहाँ की,ब्रम्ह बनके ब्रम्हपद मे जावोगे । उस ब्रम्हपद मे सुख तथा दु:ख दोनो भी नही है । मै सबको समज मे आये ऐसे

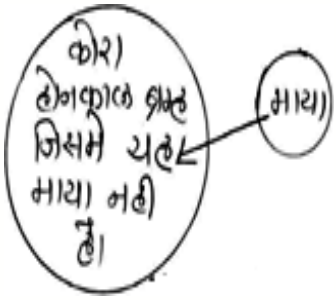

जगत के दृष्टांत बताकर वहाँ सुख कैसे नही है यह तुम्हे समजाता हूँ । जैसे पुरुष अकेला है । उसे स्त्री नही है तो ऐसे अकेले पुरुषको संसार का क्या सुख है तथा स्त्री न होने के कारण संसार का क्या दु:ख है । मनुष्य घर मे है परंतु मनुष्य के पास सुख लेने के वैभव घर मे नही तो वैभव के बिना वैभव के खेल का आनंद मनुष्य कैसे लेगा?जैसे राजा गढ पे चढ गया । गढ पे साथ मे फौज नही है तो राजा को फौज से जो सुख मिलता था वह गढ पे चढने से सुख नही मिल रहा तो उसे गढ पे फौज को संभालने का दु:ख भी नही पड रहा । ऐसा जीवब्रम्ह होने पे जीव को ब्रम्हमे सुख आनंद भी नही है तो दु:ख भी नही है ।।८।।

नारी बिन नर क्या करे ।। नर बिन नारी जोय ।।
इऊँ माया बिन ब्रम्ह हे ।। सुण ग्यानी कहुं तोय ।।
सुण ग्यानी कहुं तोय ।। अकळ बिन काम कहावे ।।
बिन आवध रजपूत ।। राड़ बिन रणमे जावे ।।
सुखराम कहे यूं ब्रम्ह होय ।। क्यां करसी कहुँ तोय ।।
नारी बिन नर क्या करे ।। नर बिन नारी जोय ।।९।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ब्रम्हज्ञानीयो को जगतका दृष्टांत देके कह रहे है की,जैसे–नारी नर बिना सुख नही ले सकती वैसेही नर नारी बिना सुख नही ले सकता । इसीप्रकार जो ब्रम्ह बन गये और ब्रम्ह मे पहुँच गये वहाँ माया नही है तो वहाँ पहुँच के भी माया न होने के कारण ब्रम्हमे सुख नही ले सकता । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ज्ञानीयो को कहते है की,राजपूत के पास शस्त्र भी नही है ऐसा राजपूत रण मे लढाई का सुख लेने जाता वहाँ उसे क्या सुख मिलेगा? यह तो बिना अक्कल का काम है याने मुर्ख बिचार का काम है । जैसे राजपूत बिना शस्त्रसे लढाई न होते हुये रणमे जाकर सुख की चाहनामे जाता वैसेही जीव होनकाल ब्रम्हमे सुख की चाहनासे जाता परंतु वहाँ सुख देनेवाली माया ही नही है तो वहाँ जीवको सुख मिलेगा क्या? जब सुख ही नही मिलगे तो जीवको ब्रम्हज्ञान प्रगट कराके ब्रम्हमे पहूँचाना यह बिना अक्कल का काम नही तो क्या ? ।।९।।

बिन उधम जो सुख हुवे ।। तो नर करे न कोय ।।
कोण भोळो संसार मे ।। नर नारी सब लोय ।।
नर नारी सब लोय ।। ब्रम्ह इंऊं खेल बणाये ।।
बिन माया सुख नहि ।। संग रमणे तब आयो ।।

सुखराम कहे नर समज रे ।। सब कुछ कीया होय ।।
बिन उधम जो सुख हुवे ।। तो नर करे न कोय ।।१०।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने सभी नर–नारीयो से कहाँ की बिना उद्यम से सुख होता है तो कोई भी पुरुष उद्यम नही करेगा और सुख को आनंद लेगा । ऐसा भोला स्त्री,पुरुष तथा जगत के लोगो मे कौन है कि बिना उद्यम सुख हो रहा है फिर भी उस सुख के लिये वह कष्ट कर रहा है । बिना उद्यम सुख नही मिलता इसलिये जीवब्रम्ह ने माया का यह खेल बनाया और मायाके साथ पाँच सुख लेने रमने आया । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज ने नर–नारीयो को समजने के लिये कहाँ कि,हे नर–नारीयो सभी सुख उद्यम करने से ही मिलते है । बिना उद्यम किये मिलते नही । अगर बिना उद्यम करके सुख मिलते थे तो किसी भी पुरुष ने उद्यम किया ही नही होता ।।।१०।।

अेक माया आनंद हे ।। दूजो ब्रम्ह बिचार ।।
तीजो पद आनंद हे ।। सतश्रुपी सार ।।
सत्त सरूपी सार ।। देर दिष्टांग बताऊँ ।।
या तीना को न्याव ।। प्रख न्यारो कर लांऊं ।।
सत्त आनंद बेराग ज्यूं ।। माया सुख ग्रेहे होय ।।
सुखराम इण दोय से ।। इंऊ ब्रम्ह अेसो जोय ।।११।।

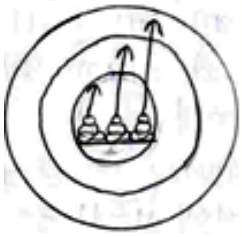

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने नर–नारीयोसे कहाँ जीव के लिये आनंद तीन प्रकार के है । एक आनंद त्रिगुणीमाया का है । दुजा आनंद त्रिगुणीमाया से निकलकर याने काल के दु:ख से निकलकर ब्रम्ह बनने का है तथा तिजा आनंद सतस्वरुप का है । मैं तुम्ह जगत के दृष्टांत देकर बताता हूँ । ये तीनो तरह के निर्णय परखकर अलग करके लाता हूँ । जैसे –जगत मे 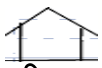 कुछ लोग ग्रहस्थी होते है तो कुछ बैरागी होते है और कुछ लोग ग्रहस्थी भी नही रहते तथा बैरागी भी नही रहते । ग्रहस्थी व्यक्ती को खाना,पिना,अच्छे बिछाने पे सोना ऐसे पाँचो आत्मा के सुख मिलते है तो बैरागी को ज्ञान सुख मिलता है । कुछ लोग संसार भी नही करते और बैरागी भी नही बनते । तो उन्हे ज्ञान का भी सुख नही मिलता परंतु संसार का देना–लेना,कर भरना आदी संसार के झमेलो का दु:ख नही पडता यह सुख मिला । इसीप्रकार एक जीव माया का आनंद लेता तो सतस्वरुप पहूँचा हुवा जीव विज्ञान ज्ञान का सुख लेता परंतु जो मायापद त्यागकर पारब्रम्ह मे पहुँचा ऐसे जीव को माया का भी सुख नही मिलता और सतस्वरुप का भी विज्ञान सुख नही मिलता । उसे मायाके काल कष्टसे मुक्त हुवा और ब्रम्ह बना ऐसा माया से मुक्त होकर ब्रम्ह बनने का सुख मिलता ।।।११।।

अेक माया रूपी पद हे ।। दूजो चेतन जाण ।।

तीजो पद सो ब्रम्ह ही ।। सुणो सकळ नर आण ।।
सुणो सकळ नर आण ।। पद चोथो ओ होई ।।
सत्त सरूप सत्त माहे ।। निसंक निर्भे हुवे कोई ।।
सुखराम कहे सब सांभळो ।। ग्यानी ध्यानी आण ।।
अेक माया रूपी पद हे ।। दूजो चेतन जाण ।।१२।।

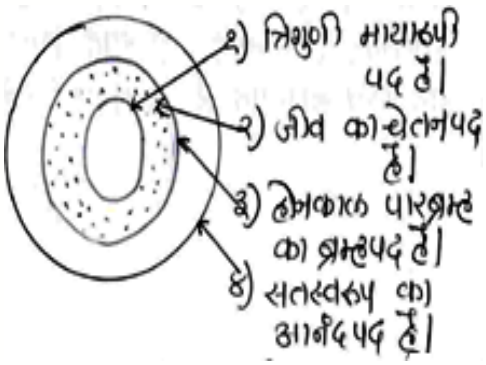

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने सभी ब्रम्हज्ञानीयों को तथा जगत के लोगो को कहाँ की जीवके वास करने के सभी चार पद है । मायारुपी पद मे माया के सुख है परंतु काल का भय है तथा यह महाप्रलय मे मिटनेवाला पद है ऐसा झुठा पद है । चेतन का याने जीव का पद बिना सुख–दु:ख का है । ब्रम्हके पदमे भी सुख और दु:ख दोनो नही । चौथा सतस्वरुप का पद है । वहाँ सिर्फ सुख ही सुख है । वहाँ काल नही है तथा वह सदा रहनेवाला पद है । उस सतस्वरुपके सतपदमे पहुँचानेवाला संत निर्भय तथा निशंक बनके रहता है । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी त्रिगुणीमायाके ज्ञानी,ध्यानी तथा ब्रम्हज्ञानी और जगत के लोगो को जीव के ठहरने के मायापद,चेतनपद,ब्रम्हपद तथा सतस्वरुप पद ऐसे चार पद है ऐसा कह रहे है ।।।१२।।

ग्यान सुख आणंद सो ।। ज्यां भ्यासो ज्यांही होय ।।
माया सुख बिन जूझियां ।। कदे न पावे जोय ।।
कदेन पावे जोय ।। पाय फिर दुखिया होई ।।
इंऊं करणी कर जीव ।। पार पहुंचे नही कोई ।।
सुखराम इन्द्रया सुख रे ।। पचियां पावे लोय ।।
ग्यान सुख आणंद तो ।। ज्यां भ्यास्यो त्यांही होय ।।१३।।

वैराग्य ज्ञानका सुख जिसने वैराग्य धारण किया उसीको होगा वह संसारीयोको नही भासता । संसारीयो को इंद्रियोके सुख प्रगट समजते । इंद्रीयोके सुख बिना जुंझे कभी नही मिलते और यह सुख पानेके बाद जीव फिर दु:खी हो जाता । इंद्रियोके सुखसे जीवको तृप्त आनंद कभी नही मिलता । इसीप्रकार त्रिगुणीमायाके सुख बिना करणी किये मिलते नही । उसके सुख जुंझकर करणी किये तो ही मिलते और जैसेही करणीसे प्राप्त किये पुण्य खतम् हो जाते वैसेही जीवको८४ लाख योनीके दु:ख पडते । जैसे १०१ यज्ञ–इंद्र–८४ लाख योनी,सत–जत–तप–स्वर्ग–लाख योनी याने सत–जत–तप यह बडी मेहनतसे जुंझके करते । उसका फल स्वर्ग मिलता

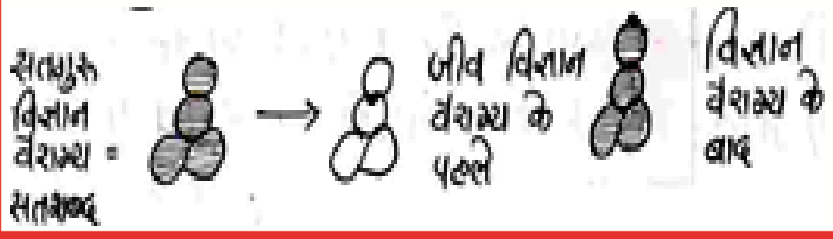

। स्वर्गमें पुण्यकर्म भोगते फिर पुण्य खतम होने पे ८४००००० योनीमें दु:ख भोगते । परंतु सतस्वरुपी जीवने विज्ञान ज्ञानकी सुख की स्थिती एकबार प्राप्त कर ली तो वह फिरसे कभी भी किसी भी प्रकार के दु:ख में नही पडता । ऐसे विज्ञान का सुख मायाके क्रिया करणीसे प्रगट नही होता । वह वैराग्य विज्ञान सतस्वरुप सतगुरुसे प्रगट करनेपे ही प्रगट होता तथा वह सुख जिसने प्रगट किया उसीको प्रगट रुप में समझता । दुजों को नही समझता ।।।१३।।

बे इन्द्रया को सुख रे ।। हट बिन लियो न जाय ।।
तीना को सुख स्हेजमे ।। लेत सरब हंस आय ।।
लेत सरब हंस आय ।। पाय फिर दुखिया होई ।।
अर भ्यास्यां सुण ग्यान ।। ताहे मे दुखन कोई ।।
ओ दिष्टांग सुखराम के ।। सब नर सुणियो आय ।।
बे इन्द्रया को सुख रे ।। हट बिन लियो न जाय ।।१४।।

कर्ण,चक्षु तथा घ्राण इन तीनो इंद्रियो के सुख सहज मे मिलते परंतु जीभ तथा लिंग ये दो इंद्रियो के सुख कष्ट किये बिना नही मिलते और सुख लेकर पुन: दु:खी हो जाते । ऐसे दु:ख जिसको वेद का वेराग्य ज्ञान भ्यासा है उसे नही होता । इसीप्रकार जीव को करणीयाँ करके माया के सुख मिलते वे सुख सदा नही टिकते । ऐसे करणीयो के सुख खतम् हुये की फिरसे काल के दु:ख पडते परंतु जिसे सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान भ्यासा उसे सुख ही सुख मिलते । उसपे काल के दु:ख फिरसे कभी नही पडते ।।।१४।।

दळ बादळ भेळा किया ।। मुलक दाबियो जाय ।।
क्या पाई वां चीज रे ।। इधक जग के माय ।।
इधकी जग के माय ।। रेत वाही सुण होई ।।
क्या इधकी क्या कम ।। रेस न्यारी नही कोई ।।
इंऊ क्रणी सुखराम क्हे ।। सब ही अेक कहाया ।।
दळ बादळ भेळा किया ।। मुलक दाबियो जाय ।।१५।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके लोगोको कहते है,जैसे राजाने फौज फाटा जमा किया और युध्द करके परमुल्क कब्जेमे कर लिया । उस राजाके पास पहले अपना मुल्क था । अपने मुलकमे जैसे प्रजा थी वैसेही प्रजा नया मुलक कब्जेमे लिया उसमे मिली । राजाको परमुलक कब्जा करनेके लिये दल बादल जमा करना पडा,लढना पडा,लढके परमुलक का कब्जा मिला । इसमे नई चीज क्या मिली?जो प्रजा पहले पासमे थी वैसे ही प्रजा परमुलक से मिली । वह प्रजा कम थी या जादा थी फरक इतना ही था । नये प्रजाको पानेसे उसके राजसुखके प्रकृतीमे जरासा भी फरक नही पडा । इसीप्रकार कम जुंझके कम करणी करो या बहुत जुंझके नई नई अनेक करणीयाँ करो सभी से पाँच

विषयो के ही सुख मिलेगे । सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान सुख इन करणीयो से मिलनेवाला नही है ।।।१५।।

अमर जड़ी बिन बाहेरी ।। सब ही जड़ीया अेक ।।
जांसूं जावे रोग रे ।। अमर न हुवे देख ।।
अमर न हुवे देख ।। सकळ क्रणी इंऊ भाई ।।
ब्रम्ह लग सो जाय ।। मोख पहुंचे नही काई ।।
ध्यान भजन सुखराम क्हे ।। लिव लग काची देख ।।
अमर जड़ी बिन बाहेरी ।। सब ही जड़ी या अेक ।।१६।।

जगत मे अनेक जडीयाँ है । उसमे एक अमरजडी भी रहती है । उन जडीयो मे से अमरजडी निकाल दी तो बाकी रही हुयी सभी जडीयाँ एक स्वभाव की है । इन जडीयों से रोग जायेगा परंतु अमरजडी से जैसे अमर होते आता वैसे अमर नही होते आता । इसीप्रकार माया और ब्रम्ह की करणीयो से त्रिगुणीपद से लेकर तो होनकाल ब्रम्हपदतक पहुँचता । यहाँ तक की कर्तारब्रम्ह भी करा देगी परंतु सतस्वरुपके मोक्षपद मे नही पहुँचेगा । इसलिये पारब्रम्हतक का ध्यान,भजन,लिव यह कच्चा है । यह सतस्वरुपके वैराग्य विधी समान सदा कालके दु:खसे मुक्त करानेवाला तथा महासुख देनेवाला पक्का नही है ।।।१६।।

सरब किसब न्यारा करे ।। अन्न सकळ ले आण ।।
इंऊ क्रणी सिंवरण ध्यान लग ।। पूर्ण ब्रम्ह पिछाण ।।
पूरण ब्रम्ह पिछाण ।। अन्न सूं खुद्या जावे ।।
सुण फिर लागे भूक ।। ब्रम्ह होय इंऊ ग्रभ आवे ।।
सुखराम उपायां भजन लग ।। सब अेकी कर जाण ।।
सर्ब किसब न्यारा करे ।। अन्न अेक ले आण ।।१७।।

जैसे सभी लोग न्यारे–न्यारे धंदा करते है और उससे धन कमाकर अनाज घर लाते है । वह अनाज भूक लगने पे खाते है। खाने से खानेवाले की भूक मिट जाती है लेकीन भुक सदा के लिये नही मिटती। इसीप्रकार पारब्रम्हतक पहुँचानेवाली करणीयाँ,स्मरण,ध्यान, लिव है यह समज। इन पारब्रम्हतक की करणीयाँ,स्मरण,ध्यान,लिव के उपायो से जीव माया को त्यागकर माया के परे परब्रम्ह मे पहुँचकर ब्रम्ह भी बन जाता है। वहाँ जीव काल के दु:खसे मुक्त होता परंतु वहाँ उसे सुख नही मिलता। वहाँ उसे सुख की भूक लगती । सुख के भूक के कारण जीव ब्रम्हपद त्याग देता और गर्भ मे आकर जीवपणा धारण करता और माया के साथ दु:ख भोगता। इसलिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी संतो को कहते है कि,पारब्रम्ह तक की सभी करणीयाँ,स्मरण,ध्यान,लिव के जितने उपाय है वे सभी उपाय गर्भ मे आकर काल के दु:ख भोगने के एकी प्रकार के है। इनमे गर्भ से

निकलकर काल से मुक्त होने का उपाय नही यह जानो ।।।१७।।

प्रम हंस नर होय कर ।। सिंवरे सिरजण हार ।।
सो ग्रस्ती सो बार रे ।। संता करो बिचार ।।
संता करो बिचार ।। कर्म तो क्रता माही ।।
निराकार निरबाण ।। सरब ओपत जांही ।।
सुखराम सबे पेदा किया ।। वो पक्को घर बार ।।
प्रम हंस नर होय कर ।। सिंवरे सिरझर हार ।।१८।।

कोई मनुष्य अपना कुल,पत्नी छोड्कर परमहंस बनता और सिरजनहार होनकाल पारब्रम्हको त्रिगुणीमायासे मुक्त ऐसा बैरागी समजकर उसकी भक्ती करता । ऐसे ग्रहस्थी जीवन त्यागे हुये परमहंस को आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,अरे परमहंस तुने त्रिगुणीमाया त्यागने के लिये ग्रहस्थी जीवन त्यागा परंतु तू जिसकी भक्ती करता वह जगतके सभी ग्रहस्थी नर–नारीयोसे सौ गुण ग्रहस्थ है। वही तो सभी सृष्टी का कर्ता है। इसीमे इच्छाके साथ ग्रहस्थी कर्म करने की वासना है। इसी ने निराकार निरबान शिवब्रम्ह, चिदानंदब्रम्ह १३ ब्रम्ह लोक और आकार याने ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती तथा ३लोक १४ भुवन तथा ४ पुरीयाँ,सभी स्त्री पुरुष पैदा किये है ऐसा यह तेरे मेरेसे सौ गुणा पक्का ग्रहस्थी है। आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज परमहंस को कहते है,त्रिगुणी माया त्यागने के लिये कुटूंब परीवार यह स्थुलमाया नही त्यागनी पड्ती। यह माया उलटी त्रिगुणीमाया त्यागनेको मदत करती। त्रिगुणी माया त्यागनेके लिये त्रिगुणी माया इच्छा तथा त्रिगुणीमाया मे रचमच हुवा सिरजनहार त्यागना पड्ता। हंस की त्रिगुणीमाया उसके मन और ५ आत्मा ड्किती। हंस के मन तथा ५ आत्मा हसंसे निकल गये की त्रिगुणीमाया अपने आपसे छुट जाती। यह मन तथा ५आत्मा त्रिगुणी मायासे याने ब्रम्हा,विष्णू,महादेव तथा शक्तीसे निकलती नही। इसलिये परमहंस तू सिरजनहार अटल पुरुष है,त्रिगुणी माया से न्यारा है, बैरागी है समजकर भक्ती करता। सिरजनहार अटल है परंतु वह खुद ग्रहस्थी है और त्रिगुणी माया के वश है और उस त्रिगुणी माया मे पुरी तरह अटका है। ऐसा सिरजनहार तेरी त्रिगुणीमाया कैसे निकालेगा?जो सिरजनहारका सिरजनहार है ऐसा सतस्वरुप सतगुरु जो विज्ञान बैरागी है,जो ग्रहस्थी नही तथा वह मन और ५ आत्मा इस माया से न्यारा है ऐसे सतस्वरुप सतगुरुका स्मरण कर। वह पक्का बैरागी है,उसके अंदर त्रिगुणी माया के किसी प्रकार के कर्म नही है तथा वह त्रिगुणी माया के पूर्णत: परे है ।।।१८।।

सब माया सूं लग रहया ।। साध सिध अवतार ।।
अलख निरंजण आप हे ।। वाहाँ लग माया धार ।।
वाहाँ लग माया धार ।। अढळ अेक पुर्ष कहावे ।।
वा माया हे असल ।। चाल वाँसू हंस आवे ।।

सुखराम हद बेहद लग || बेहे माया की धार ||
सब माया सूं लग रहया || साध सिध औतार ||१९||

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज जगतके लोगोको कह रहे है की,जगतके सभी साधू,सिध्द, अवतार ये सभी मायाके धार मे बह रहे है । अलख जो लखनेमे नही आता । निरंजन जो इंद्रीये रहीत है ऐसे होनकाल पारब्रम्हसे ही माया की धार बह रही है । यह होनकाल पारब्रम्ह अटल पुरुष जरुर है परंतु यह योगी नही है । यही असली माया है । यही त्रिगुणी मायाके साथ भोग करता । इसके भोगसे ही हंस पारब्रम्ह पदसे उतरकर निचे साकारी माया के पद मे आते इसलिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी, ध्यानीयो को कहते है की हद याने त्रिगुणी माया तक और बेहद याने पारब्रम्ह तक माया की ही धार बह रही है मतलब सभी साधू, सिध्द और औतार माया मे ही अटके है, माया के परे नही पहुँचे है ।।।१९।।

सतश्रुप तो ब्रम्ह नही || नही साहेब नही जीव ||
ना कोई पुर्ष नार हे || ना कुछ यार न पीव ||
ना कुछ यार न पीव || सुणो ग्यानी जग सारा ||
सतश्रुप ज्यूं चीज || इसो पद अमर बिचारा ||
सुखराम क्हे आणंद हे || नही धीणो नही धीव ||
सत्त सरूप तो ब्रम्ह नही || नही साहेब नही जीव ||२०||

सतस्वरुप यह होनकाल पारब्रम्ह समान ब्रम्ह,जीवब्रम्ह समान चेतन,मन तथा पाँच आत्मा समान माया,इच्छा के समान त्रिगुणीमाया,संसारो के देह के समान साकारी माया नही है। वह सृष्टी की निर्मिती करनेवाले साहेबके स्वभाव का नही है। वह सुख चाहनेवाला और मायामे पड्कर कालके दु:ख भोगनेवाले जीवके स्वभाव का नही। वह मनके विकारी स्वभाव का नही है और शब्द,स्पर्श,रुप,रस,गंध इन पाँचो आत्माके विकारी स्वभाव का नही है तथा त्रिगुणी माया के तीन गुणो के विकारी स्वभाव का नही। वह सतस्वरुप पुरुष भी नही है और स्त्री भी नही है। वह मित्र भी नही है और मालिक नही है। वह इन सबसे न्यारा है । सदा रहनेवाला है। उसका स्वरुप सत्त है। उसके स्वरुप मे असत माया कही पे भी नही है। वह विज्ञान बैरागी है। वह अमर है। उसका पद अमर है वहाँ आनंद ही आनंद है। उसके पदमे काल के दु:ख नेकमात्र भी कही नही है। वहाँ पहुँचनेवाले सभी अमर है। सभी सदा रहनेवाले है। वहाँ पे पहुँचे हुये हंसोको सदा आनंद मिलते रहता। उस आनंदमे पहुँचे हुये संतको माया मे जैसे पचना पड्ता वैसा पचना नही पड्ता। यह माया मे कैसे पचना पड्ता इसका आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने जगत का दुध,घी का दाखला दिया। जैसे–गाय दूध देती उस दूध का दही,घी बनता। उस दूध,घी का जगत आनंद लेता । कुछ समय के बाद गाय का दूध देना खुंट जाता फिरसे दूध निपजे तबतक

बिना दूध,घी का रहने पड्ता। गायने दूध देना शुरु किया की दूध,घी के सुख फिरसे मिलना चालू होता। जैसे गायके दूध,घी का आनंद लेना है तो गाय से दूध निकालने को तथा दूध से घी बनाने को पचना पड्ता। ऐसे माया से सुखो के लिये पचना पड्ता । मायासे सदा सुख नही मिलते,खंडीत सुख मिलते। इसलिये मायासे लिव, भजन,ध्यान ऐसी क्रिया करते ही रहनी पड्ती। सतस्वरुप मे ये क्रिया कर्म कुछ करने नही पड्ते । वहाँ पहूँचे की सदा आनंद ही आनंद मिलता । ऐसा यह सदा रहनेवाला अमरपद है । ।।२०।।

।। कुंडल्या ।।

ब्रम्ह ग्यान मत धार के ।। कहा इधक कोई होय ।।
ओतो हे ज्युं बण रहयो ।। जाण मा जाणो कोय ।।
जाण मा जाणो कोय ।। इधक ओछो नही होई ।।
जेसे रवि प्रकास ।। मंड सारी पर लोई ।।
बस्त बणी ज्यां बण रही ।। जाण्या सूं क्या होय ।।
यूं ब्रम्ह ग्यान सुखराम के ।। धार इधक नही कोय ।।२१ ।।

जीव यह ब्रम्ह है । जीव यह आदी मे भी ब्रम्ह था,आज भी ब्रम्ह है तथा आगे भी ब्रम्ह रहेगा । ब्रम्हज्ञानका मत धारकर जीव ब्रम्ह कैसे है समजनेसे जीव के ब्रम्ह मे कुछ फरक नही पडेगा । वह जानो या मत जानो उससे उसमे पहले से अधिकपणा नही आयेगा या कमीपणा नही आयेगा । जैसे–सुरज का प्रकाश सब सृष्टीमे है । उसे जाननें से जादा प्रकाश होगा और नही जाननेसे कम प्रकाश होगा ऐसे कभी नही होगा । उसे जानो या मत जानो सुरजके प्रकाश मे कुछ फरक नही पडेगा । वह तो जैसा बना है वैसा ही बने रहेगा । इसीप्रकार ब्रम्ह यह चीज जैसे आदी मे बनी है वैसेही अंततक बने रहेगी । जानने से या न जानने से उसमे कम–जादा नही होगा ।।।२१।।

को क्रणी की बात ।। ताय लेणे दे धारी ।।
सुभ असुभ सो खोल ।। छांट के क्हो बिचारी ।।
छांट के कहो बिचारी ।। ताहे लेणे ओ आयो ।।
ओतो आपो आप ।। कांय ओ जीव कहायो ।।
ओ तूं ग्यान बिचार के ।। बात मानो सुण म्हारी ।।
को कर्णी सुखराम ।। ताहे लेणे देहे धारी ।।२२।।

इस जीवब्रम्हने किस करणीके लिये मायाका देह धारन करना कबून किया?किस करणी के लिये वह पाँच तत्वके देह मे आया?वह शुभ करणीयाँ करने आया या अशुभ करणीयाँ करने आया?यह खोल खोलकर छाट–छाटके मुझे बतावो । शुभ करणीसे उसे स्वर्गादिक मे पाँच इंद्रियो के मनोवांछित सुख मिलते है यह तो ठिक है परंतु नरक मे पड्कर अनंत दु:ख भोगना पड्ता यह क्यों कबूल किया?यह तो स्वयम् ब्रम्ह था । ब्रम्ह को कर्म लगते

नही फिर इसके उर मे क्या था की उसे मायावी जीव बनने की चाहना हूई?यह समजना है । वह ब्रम्ह कैसे है यह समजने से तेरा काम नही होगा । उसे मायावी देह धारन करने पे सुख के साथ दु:ख मिलेंगे यह समजते हुये भी उसने ब्रम्हसे जीव होना पसंद किया इसका ज्ञानी तू बिचार कर। यह मेरी बात समझ। उसे कौनसे सुख चाहिये थे जिसके लिये उसने नरक के दु:ख भोगना भी पसंद किया। इसलिये ब्रम्ह बनके ब्रम्ह मे पहुँचने के बजाय काल के दु:ख से मुक्त ऐसे जो सुख चाहिये वे उसे कैसे मिलेंगे?वे खोज ।।।२२।।

ब्रम्ह ग्यान बिन ऊपने ।। ऊंच नीच संग जाय ।।
सो नर सब पिस्तावसी ।। अंत काळ के मांय ।।
अंत काळ के माय ।। मार पडसी सिर भारी ।।
यां तीना की मरजाद ।। भांग के करी खुवारी ।।
पाप ध्रम की बास्ना ।। रेती हे उर माय ।।
जब लग झूटो कथत हे ।। ब्रम्ह ग्यान कूं आय ।।२३।।

जीव को सदासे सुख चाहिये इसलिये उसने ब्रम्हपद छोडा और त्रिगुणी मायाके पदमे आया है । त्रिगुणीमाया मे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव इनके त्रिगुणोके नियम चलते है । इन्होने निच उंच कर्म के नियम बनाये है। उंच कर्म करने पे पुण्य होता है और निचकर्म करने पे पाप लगता है ऐसे नियम बनाये। उंचकर्म करनेवाले को स्वर्गादिक दिया जाता है तो निचकर्म करनेवाले को नरकादीक दिया जाता है। जीव यह आदी से होनकाल ब्रम्हपद मे रहता था । वहाँ वह ब्रम्ह था इसलिये उस वक्त उसे ब्रम्हज्ञान था । वहाँ वह मायावी नही था । माया के देश मे आकर मायावी बन गया। आदी मे जैसा ब्रम्ह था वैसा ब्रम्ह रहने का उसके पास का कुद्रती ब्रम्हज्ञान मायावी देश मे जनम लेने के बाद लोप हो गया तथा माया मे पडने के बाद वैसा ब्रम्हज्ञान उसने हासील भी नही किया तथा उसके हृदय मे पाप और पुण्य की वासना भी रह रही है। फिर भी मै ब्रम्ह हूँ और ब्रम्ह को कर्म लगते नही ऐसा झूठा ब्रम्हज्ञानी मन से ही बनकर निचकर्म करने लगता। झूठा मनसे ही ब्रम्हज्ञानी समजनेसे उसको कर्म नही लगेगे ऐसा नही होगा। वह उंच लोगोका संग करके उंच कर्म करेगा तो उसे पुण्य लगेगे और वह निच लोगोका संग करके निचकर्म करेगा तो उसे पाप लगेगे । ऐसा झूठा ही ब्रम्हज्ञानी हूँ सोचके ब्रम्ह के नाम पे निचकर्म करने से ब्रम्हा,विष्णू,महादेव के नियमो का उल्लंघन होगा । वह असली ब्रम्हज्ञानी रहता तो असल मे उसे कर्म लगते नही थे और ब्रम्हा,विष्णू,महादेव के नियमोको उल्लंघन नही होता था । जीव ब्रम्हज्ञानी न होनेके कारण ब्रम्हा,विष्णू,महादेव के नियम तोडे गये । अब वे नियम तोडने पे अंतकालमे यम उसे नरकमे डालेगे तथा काल का बुरीतरह से उसके सिरपर मार पडेगा तब वह हंस ब्रम्हज्ञानके नाम पे निचकर्म किये इसलिये पछ्तायेगा । इसलिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज झूठे ब्रम्हज्ञानीयोको कहते है कि,ब्रम्हज्ञान उत्पन्न न होते हुये

भी ब्रम्हज्ञान हूवा ऐसा झूठा आधार लेकर ब्रम्हा,विष्णू,महादेव की मर्यादा भंग करके निचकर्म करोगे तो नरक के महादु:ख पडेगे ऐसी खराबी होगी ।।।२३।।

ब्रम्ह ग्यान तब साच ।। बिष इम्रत सम जाणे ।।
बेटी माता बेन ।। नार सागे कर माणे ।।
लेवे सबे सवाद ।। फेर धणियापे नाही ।।
सुभ असुभ की चाय ।। आस मासो कुछ नाही ।।
जीवण मरण अेको गिणे ।। जस कुजस नही कोय ।।
ब्रम्ह ग्यान सुखराम के ।। वां के उर घट होय ।।२४।।

ब्रम्हज्ञानी झुठा कैसे पहचानना यह सच्चे ब्रम्हज्ञानी के गुण वर्णन करके आदी सतगुरु सुखरामजी महाराजने जगत को समझाया है। असली ब्रम्हज्ञानी को विष यह मारनेवाली माया तथा अमृत यह तारनेवाली माया यह नही दिखती। उसे विष व अमृत समान दिखता । उसे बेटी,माता,पत्नी,बहन ये अलग अलग नही दिखते। उसे ये सभी ब्रम्ह है और मैं भी ब्रम्ह हूँ, ऐसे सभी एक समान दिखते। इसकारण वह सभी के साथ सभी भोग करता परंतु किसीपे भी, जैसे माया में पुरुष स्त्रीपे पत्नीका अधिकार,बहनपे भाईका अधिकार,माँ पे पुत्र का अधिकार तथा बेटीपे बापका अधिकार रखता। वैसे अधिकार वह ब्रम्हज्ञानी नही रखता। उसमें शुभ याने अच्छे कर्मोसे सुख मिलेंगे व अशुभ याने निच कर्मोसे दु:ख पडेगे, यह विषमता नही रहती। उसे सुख-दु:ख एक समान दिखते। इसलिये उसमें शुभ कर्म करके व अशुभ कर्म टालके सुख पाने की चाहना मासाभर भी नही रहती । वह ब्रम्हज्ञानी मरण तथा जिंदा रहना एक सरीखा समझता । मरा तो भी मैं ब्रम्ह हूँ व जिंदा हूँ तो भी मैं ब्रम्ह हूँ,ऐसा एक सरीखा समझता। वह ब्रम्हज्ञानी जस तथा कुजसको मानता नही। मतलब जस आया तो सुख पडेंगे व कुजस आया तो दु:ख पडेंगे ऐसे मानता नही। उसे सुख व दु:ख भिन्न भिन्न नही दिखते। इसलिए जस व कुजस भी भिन्न भिन्न नही दिखते। ऐसा जिस हंसके उरमें ज्ञान प्रगट हुवा रहता वही सच्चा ब्रम्हज्ञानी है। इस ज्ञानके गुणोंमें जो नही बैठता परंतू स्वयम्को ब्रम्हज्ञानी कहता। वह झूठा ब्रम्हज्ञानी है ऐसा आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानी,ध्यानी नर-नारी को बता रहे है ।।।२४।।

करे जात मे ब्यांव ।। बेन बेटी प्रणावे ।।
डसे सर्प तब आय ।। सोच चित्त माही लावे ।।
तब लग झूटो कथत हे ।। मुख सूं ब्रम्ह ग्यान ।।
आप जात मे फस रहयो ।। देहे ओर कूं आन ।।२५।।

जब तक अपनी जाती में शादी कर रहा है और बहन और बेटी की भी शादी अपनी जाती में ही करता है । और सर्प में आकर डँस लिया तो मन में चिंता करता हैं वह झूठा है । क्योंकी स्वयम तो जाती में फँस रहा हैं औंर दुसरों को ब्रम्हज्ञान बता रहा है ।।।२५।।

कुंडल्या ।।

बाळक ब्रम्ह सरूप हे ।। भर जोबन मे जीव ।।
जब बिग्यान प्रकासियो ।। जब स्मर्थ क्हे सीव ।।
तब समरथ कहे सीव ।। दसा तीनु इण पाई ।।
किसी अधिक या माहे ।। सोझ कहिये मुज भाई ।।
सुखराम क्हे पद तीन अे ।। लेणे हार ओ जीव ।।
बाळक ब्रम्ह सरूप हे ।। भर जोबन मे जीव ।।२६।।

जैसे जीव ब्रम्ह ज्ञानसे ब्रम्ह के स्वभाव समान रहता वैसे के वैसे बालक अवस्था मे जीव बिना ज्ञान से ब्रम्ह के स्वभाव समान रहता। उसे विष–अमृत,अपना–पराया ऐसे कुछ नही दिखता। वह जब पूरा जवान हो जाता तब वही जीव जीव के समान याने माया के पुरा वासनिक स्वभाव का बन जाता तब उसे उसका–पराया,विष–अमृत,बहन–बेटी,माँ–पत्नी,नफा–तोटा यह सब मायावी वस्तू अलग–अलग दिखती। उसे विज्ञान ज्ञान प्रकाश हुवा तो वह संसार से हटकर विज्ञानी बन जाता। जैसे जीवने एकही शरीरसे बालककी दशा पाई याने बिन ब्रम्हज्ञान से ब्रम्ह की दशा पाई और जवान हुवा तब जीव ने जीव की दशा पाई याने संसार के सुख–दु:ख की माया दशा पाई तथा होनकाली ब्रम्हा का विज्ञान घट में पाया तब होनकाली कर्ता समान समर्थ विज्ञानी की दशा पाई याने तीनो दशा संसारी माया की,जीव ब्रम्ह की तथा होनकाली समर्थ पारब्रम्ह साहेब की दशा एक ही हसं ने पाई । इन तीनो दशा मे पाँच आत्मा के सुख से लेकर होनकाली विज्ञानतक माया के सुख मिले मतलब कुल के याने माया माता के और ब्रम्ह पिता के सुख मिले । इसमे नया क्या मिला? जो ब्रम्ह माया के लिये कुल कुटूंब से न्यारा है मतलब माया की भक्ती करके और ब्रम्हज्ञानी बनके आज दिनतक माया तथा होनकाल ब्रम्ह के सुख ले रहे थे और आजभी वे ही मिले नया सुख क्या मिला? मतलब ब्रम्ह बना तो भी माया मे ही है । जीव बना तो भी माया मे ही है । समर्थ सिव बना तो भी माया मे ही है । माया के परे वैरागी नही है । संसार रुप है–ज्ञानरुप नही है । जनम–मरण के परे याने जनम–मरण मे न आनेवाला ज्ञानरुप नही है ।।।२६।।

गुर पद न्यारो सत्त हे ।। ज्यूं अमर फळ होय ।।
ओर राम लग भक्ति सो ।। अन्न जळ जड़ियां जोय ।।
अन जळ जड़िया जोई ।। सर्ब सुख ज्हाँ जावें ।।
यूं कर्णी रट राम ।। मुक्त लग जन फळ खावे ।।
सुखराम उपाया अेक सो ।। ना ना बिध की जोय ।।
गुर पद न्यारो सत्त हे ।। ज्यूं अमर फळ होय ।।२७।।

गुरुपद कुलपद से न्यारा है याने त्रिगुणी माया माता पद और होनकाली पारब्रम्ह पिता पद

से न्यारा है। वह कल भी था,आज भी है और कल भी रहेगा ऐसा सतपद है । अमलफल खाने से जैसा मनुष्य अमर हो जाता वैसा गुरुपद यह सतपद है । इस गुरुपद की भक्ती करने से हंस अमर हो जाता । वह कभी गर्भमे नही आता । और रामतक याने होनकाल पारब्रम्हतक की भक्तीयाँ अन्न जल तथा गाजर मुलीया खाने समान है । यह सभी भक्तीयाँ फलवान है । निष्फल कोई भी नही । गुरुपद की भक्ती छोडकर अन्य भक्तीयो से जीव माया के सुखो मे जाता परंतु अमर नही होता मतलब माया की करणीयाँ करके तथा होनकाळ पारब्रम्ह राम का रटन करके संत पारब्रम्ह के मुक्तीतक का फल प्राप्त करता,गुरु का सतपद प्राप्त नही कर सकता । इसलिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि,ये नाना बिधी की सभी भक्तीयाँ मातापद या पितापद याने कुल के फल पाने का ही उपाय है,माता-पिता के परे का गुरुपद पाने का उपाय नही है ।।।२७।।

काम सरब इण जग का ।। कहया करे सब आय ।।
पण चिजां की प्रक्षा ।। किस बिध किवि जाय ।।
किस बिध किवि जाय ।। ग्यान इण आसे जाही ।।
लाख कहो कोई आण ।। समझ तो घट के माही ।।
सुखराम नाम सत दुलभ हे ।। सिमरण स्हेज उपाय ।।
पण भेदा भेद मे भेद रे ।। किम द्रसावे लाय ।। २८।।

जगतमे सारे काम कहने पर सभी काम कर सकते उसके लिये उन्हे घटमे उंडी समज रहने की जरुरत नही परंतु राग,नाडी,न्याय इसकी परीक्षा सिखना यह सिर्फ ज्ञान सुनके नही होता । उसके लिये उस चिज की जीव के उर मे पहले से ही उंडी समज चाहिये । वह उसमे समज नही होगी तो लाख प्रकार के उपाय किये तो भी राग,नाडी,न्याय इन चिजो के परीक्षा के विधी का ज्ञान घटमे प्रगट नही होगा। भलाई वह रात-दिन राग, नाडी,न्याय इन चिजोको जाननेवाले प्रवीण जानकारोके साथ सिखनेके लिये उनके मुखसे ज्ञान सुनते रहे । इसीप्रकार रामनाम लेना तथा अन्य करणीयाँ सहज है परंतु सतगुरुमे जो सत है उस सतको समजना कठीण है। उसे समजनेके लिये होनकाल क्या है, त्रिगुणीमाा क्या है,जीव क्या है,जीव का मन क्या है,जीव के पाँच आत्मा क्या है? इन सब का भेद मे का भेद जीव के उर मे भासना चाहिये । फिर ही इन भेद मे के भेद मे का भेद जो सतस्वरुप है वह समजेगा । राम लेना सहज उपाय है उससे सतगुरु मे का सत शिष्य के घट मे प्रगट होगा नही ।।।२८।।

रागी पागी पारखुं ।। नाड़ी बेद रूं न्याव ।।
इण बिध ग्यान प्रकास रे ।। किस बिध सीख्यो जाय ।।
किस बिध सीख्यो जाय ।। ग्यान पद कहत न आवे ।।
कथणी सबे उपाय ।। ब्रम्ह माया कूं गावे ।।

सुखराम समझ यूं ग्यान की ।। उपजे नर उर माय ।।
रागी पागी पारखुं ।। नाड़ी बेद अरूं न्याव ।।२९।।

रागी याने गानेवाला,पागी याने पैरोके चिन्ह पहचाननेवाला,पारखू,नाडी वैद्य और न्याय इनका ज्ञान सुननेसे या सिखनेसे घटमे प्रकाशित नही होता । इसीप्रकार ज्ञान विज्ञान पद सुननेसे या सिखनेसे घटमे प्रकाशित नही होता । जैसे–रागी,पागी,पारखू,नाडी वैद्य तथा न्यायका ज्ञान मनुष्य उरमे ज्ञानकी समज रहेगी तो ही प्रकाशित होता इसीप्रकार ज्ञान विज्ञान पदकी समज उरमे रहेगी तो ही जीवके घटमे ज्ञान विज्ञान प्रकाशित होगा । सुनके और सिखके प्राप्त किये हुये उपाय ब्रम्ह और मायातक पहूँचने के है,गुरुपदमे पहुँचने के नही है ।।।२९।।

करम बड़ा बळबान हे ।। कन बळवंत हे करतार ।।
होण हार कन जबर हे ।। सताँ करो बिचार ।।
संताँ करो बिचार ।। राम तो घट घट होई ।।
जेती करी उपाय ।। ब्रम्ह लग ओर न कोई ।।
सुखराम धणी तो को नही ।। क्हो कुण कर्णे हार ।।
क्रम राम होण हार हे ।। तीनु अड़या बिचार ।।३०।।

कर्म बडे है या कर्म करनेवाला कर्तार बडा है या होनहार बडा है इसका संत हो बिचार करो । राम तो हर घट घटमे बैठा है । जितने करणी क्रिया के उपाय जीव करता है वे सभी ब्रम्ह याने होनकालतक ही जाते है । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की,चेतन जीवके उपर तो कोई धनी नही है फिर करनेवाला कौन है इसप्रकार करम,राम याने चेतन जीव तथा होनहार आपसमे याने माया,जीव चेतन तथा होनहारमे बडा कौन है ऐसी अड्वी तीनोमे पडी है। ।।३०।।

कर्म राम तो अेक ही ।। देखो ग्यान बिचार ।।
बिन चेतन करतार रे ।। क्हो कुण कर्णे हार ।।
क्हो कुण कर्णे हार ।। ब्रम्ह माया सब अेकी ।।
आद अंत अरू मध ।। कबू न्यारी नही देखी ।।
सुखराम समो हुण हार रे ।। पुळां ज न्यारी होय ।।
अे कर्ता बस को नही ।। सुण ग्यानी कहु तोय ।।३१।।

कर्म और होनकाल राम एक ही है । ज्ञान से बिचार करो यह जीव चेतन ही करतार है । जीव चेतनके सिवा और कोई कर्म करवानेवाला नही है । जीव मायासे कर्म करता उसमे होनकाल ब्रम्ह है इसप्रकार ब्रम्ह और माया यह आद,मध्य तथा अंत तक एकही है । यह माया होनकाल से न्यारी कभी नही देखी । इस जीव कर्तार के साथ मे होनहार के पुळ याने समय नही है बाकी सभी कर्म चेतन जीव कर्तार के ही बस मे है मतलब होनहार का

कर्ता कोई और है मतलब चेतन जीव के उपर जो होनहार है और होनहार के उपर सतस्वरुप राम है यह ज्ञान से समजो । ।।३१।।

झगड़ झगड़ बहु झगडियाँ ।। झगड़ो मिटे न कोय ।।
इंऊ करणी सूं सुण हंस का ।। कर्म न दूरा होय ।।
क्रम न दूरा होय ।। रोस लेग्यो मन माही ।।
तब पुगे सुण डाव ।। ता दिन चुके नाही ।।
सुखराम ग्यान बिन सुळझिया ।। निर्भे कबू न होय ।।
झगड़ झगड़ ब्हो झगड़ियां ।। झगड़ो मिटे न कोय ।।३२।।

झगड-झगड कर जैसे बहुत झगडनेसे झगडा मिटता नही वैसेही करणी करनेसे जीवो के कर्म दूर होते नही। जैसे झगडा करनेवाले दोनो के मन मे रोष बना ही रहता,वह रोष झगडते-झगडते नही मिटता। वैसेही कर्म करनेसे कर्म नही मिटते । झगडा करनेवाले का डाव आयेगा उस दिन धोका करनेमे वह नही चुकेगा। आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि झगडा करनेवाले को झगडा सुलझे बगेर धोका बना ही रहता वैसेही जीव मन से कर्मोसे याने काल से मुक्त हूँ यह समजनेसे कालसे भयरहीत कभी नही होगा । काल डाव आने पे जीव को पकडने मे कभी नही चुकेगा। उसे घट मे सतस्वरुप विज्ञान ज्ञान प्रगटने के बाद ही काल का भय नही रहेगा,वह कालसे मुक्त निर्भय बन जायेगा। इसलिये आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जैसे झगड-झगडकर झगडा नही मिटता वैसेही कर्मोसे याने नये कर्म करके कर्म नही मिटेगा याने काल से मुक्त नही होगा ।।।३२।।

राड़यां राड़ं न भागसी ।। अन्न सूं भूक न जाय ।।
जळ सूं त्रषा नैं बुझे ।। बोहो जळ पीयो आय ।।
बोहो जळ पीयो आय ।। नींद सुय नींद न जावे ।।
इंऊ करणी सुं करम ।। कर्मा को छेह न आवे ।।
सुखराम क्हे वां चीज कहो ।। अे फेर न लागे आय ।।
राड़यां रांड़ न भागसी ।। अन सूं भूक न जाय ।।३३।।

आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते बहुत झगडा करनेसे झगडा नही मिटता। जैसे- अन्न खानेसे सदाके लिये भूक नही जाती । जल पिनेसे या बार बार जल पिनेसे सदाके लिये प्यास नही बुझती । जादा निंद ले ली तो सदाके लिये निंद नही जाती उसीप्रकार करणी करनेसे पिछ्ले कर्म खतम नही होते बल्कि वे नये कर्म जीवके ऊपर जडे जाते । आदी सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते बार बार खानेसे जादाके लिये भूक नही जाती या बार बार झगडनेसे झगडा मिटता नही इसीप्रकार बार बार नई क्रिया करणी करनेसे किये हुवे पुराने कर्म नही मिटते । जिससे पुराने कर्म मिटेंगे तथा नये कर्म लगेगे नही वह चीज क्या है वह कहो ।।।३३।।

रांड़ साच सूं भागसी ।। भूक सत्त सूं जाय ।।
सत्तगुर अेसी चीज ।। फळ अमर देवे लाय ।।
फळ अमर देवे लाय ।। जोग तो रोग गमावे ।।
यूं गुर पद मे समझ ।। हंस प्रम मोख सिधावे ।।
सुखराम ब्रम्ह लग ग्यान सो ।। वे झूटा जग माय ।।
राड़ साच सूं भागसी ।। भूक सब्द सूं जाय ।।३४।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जैसे झगडा सत्य बोलने से भाग जायेगा जिस असत्य के कारण झगडा था वह न्याय से सुलझा लिया याने सच से सुलझाया की वह झगडा खतम हो जायेगा। इसीप्रकार वासना की भूक सतवैराग्य से जायेगी । सत वैराग्य के सिवा वासना की भुक कभी नही जायेगी। शरीर मे रोग है वह भोग से कभी नही जायेगा उसके लिये योग करना पडेगा । वह योग रोग गमा देगा । ऐसे ही सतगुरु का शरण लोगे तो सतगुरु काल कर्मको काट देगे। वे सतगुरु हंस को गुरुपद मे पहुँचनेका अमर फल देते है। वह अमर फल खाने पे परममोक्ष प्राप्त होता है। जैसे झगड्नेसे झगडा मिटता नही तथा अनाज खानेसे भूक जाती नही उसीप्रकार होनकालतक के कर्म क्रियाये परमसुख मे पहुँचाती नही । ये सभी क्रिया झूठी हे । इनके भरोसे अमरलोक मिलेगा यह सोचना झूठी सोच है ।।।३४।।

संक्रा चार्ज बोलिया ।। से बायक कहुं तोय ।।
अंछया कारी ब्रम्ह की ।। अे कहिये प्रगट दोय ।।
अे कहिये प्रगट दोय ।। बास हूतिके नाही ।।
बिन केवळ अरस परस ।। कुछ सूझे नही माही ।।
सुखराम ज्हां लग पूगिया ।। ज्यांहा मेहेर की जोय ।।
संक्रा चार्ज बोलिया ।। से बायक कहुँ तोय ।।३५।।

शंकराचार्य के बचन है की होणकाल पारब्रम्ह और इच्छा प्रगट रुपमें दो दिखते । वे दो रहे तो भी एक ही है क्यो की इच्छा यही ब्रम्ह की कार्यकर्ती है । शंकराचार्य कहते है की फिर भी ज्ञानीयो को ब्रम्ह वैरागी ही है ऐसा दिखता ब्रम्ह मे माया के साथ भोग करने की वासना है यह नही दिखता। केवल ज्ञानके अरस परस हुए बिना ब्रम्हको मायाके साथ भोग भोगने की वासना है यह किसीको भी नही दिखेगा । केवल ज्ञान उपजने के बाद ही वह वैरागी नही है वह माया का भोगी है यह सुनेगा । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसा केवल प्रगट करनेके लिए सतगुरु की मेहेर लगती ।।।३५।।

न्यारो पद कूं सब कहे ।। भेदं न जाणे कोय ।।
अेके माहे अनेक हे ।। अेक अनेकां होय ।।
अेक अनेकां होय ।। तहाँ लग न्यारो नाही ।।

जे ब्रम्ह की पेदास ।। कोण बिध न्यारो कुवाही ।।
सुखराम ब्रम्ह सूं दूसरो ।। सो मत्त न्यारो होय ।।
न्यारो पद कूं सब कहे ।। भेद न जाणे कोय ।।३६।।

ज्ञानी घ्यानी ब्रम्हपद को माया पद से न्यारा कहते है । यह माया आद से मध्य तथा अंततक ब्रम्ह से न्यारी नही है इस ब्रम्ह तथा माया के संसार से ही इस एक त्रिगुणी माया से अनेक माया बनी है। जैसे जगत मे पिता–माता रहते है। पिता और माता दिखते दो परंतु रहते एकही। पिता के द्वारा माता से अनेको की उत्पत्ती होती है। इसलिये माता और पैदा हुये वे पुत्रो का घर पिता से न्यारा है यह कौन कहेगा। वैसेही ब्रम्हपिता को माया माता तथा माया से उत्पन्न हुई सगुणी मायावी रुपोसे अलग कैसे कहोगे । जगत मे जैसे इस ग्रहस्थी मात–पितासे बैरागी साधू न्यारा रहता है वैसा होनकाल ब्रम्ह पिता तथा त्रिगुणी माता पिता इससे न्यारे मतवाला इन दोनोसे न्यारा है यह भेद ज्ञानी जानते नही इसलिये पितारुपी ब्रम्हको ही कुलसे न्यारा समजते है और उसकी भक्ती करके कुलमेही काल का दु:ख भोगते पडे रहते । ।।३६।।

जळ सुं उपजी चीज रे ।। सो सब अेकी होय ।।
यूं मुख चडिये सुण नांव मे ।। न्यारो नाव न कोय ।।
न्यारो नाव न कोय ।। सभ को फेर कहावे ।।
---------- ।। नटे सो पळें जावे ।।
सुखराम नाव न्यारो तको ।। कवीन पावन कहूं तोय ।।
जळ सूं उपजी चीज रे ।। सो सब अेकी होय ।।३७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है जैसे जल से उत्पन्न हुई चिजे सब एक ही है । उन सभी चिजो मे जल ही मिलेगा । उन चिजो मे अमृत नही मिलेगा। अमृत से निपजे हुये चिज मे ही अमृत मिलेगा । ऐसेही मुखसे बोले जानेवाले कोई भी नाव हो यह माया ब्रम्ह के ही है । मुख माया यह माया ब्रम्ह की उपज है । मुख यह माया ब्रम्ह की उपज है यह रटने से गुन्हा बंधेगा । ऐसेही मुखसे बोले जानेवाले नाव माया ब्रम्ह के नाम ही है यह रटना याने काल के मुखमे जाना है । इसप्रकार जो नाम न्यारा है वह जो मुखसे बोले नही जाता वह सतगुरु के मेहर सिवा कभी प्राप्त नही होता वही नाम सबसे न्यारा है बाकी सभी मुखसे बोलनेवाले नाम एकही जैसे जल से निपजी हुई चीजे सभी एकही है ।।।३७।।

दोय चीज जोड़े खड़ी ।। जात पांत बिध दोय ।।
सो न्यारी सुण जाणिये ।। ओर अेक सब होय ।।
ओर अेक सब होय ।। भेद अेसो कोई पावे ।।
इंऊं न्यारो निझ नाव ।। सोझ कोई मोहे बतावे ।।
सुखराम ब्रम्ह बिन नाम रे ।। सो सुण बीजो होय ।।

दोय चीज जोड़े खड़ी ।। जात पांत गुण दोय ।।३८।।

जैसे दो जात पात के लोग जोडे खडे है। उदा.हिंदू मुसलमान है। दोनो जातपात मे कुछ लोग सुख समृध्दीवाले रहेगे तो कुछ लोग दु:ख दरीद्रीवाले रहेगे। दोनो जात–पात के समृध्दीवाले सरीखे है परंतू जातपात न्यारी होने के कारण वे न्यारे है। समृध्दी सरीखी है इसलिये हिंदू–मुसलमान की जात एक नही होती वैसेही दोनो जातपात मे सरीखे गरीब है इसका अर्थ दोनो गरीब अपस मे एक नही हुये ये दोनो जातपात से अलग होने के कारण अलग ही रहे । एकही जात के गरीब,अमीर,चतुर,विद्वान ये एक बनके रहे । दुजे जातके लोग इनसे न्यारे ही है । जैसे–दो जात पात न्यारे रहते ऐसा भेद जिसको समजता वही निजनाम यह मुखसे बोलनेवाले माया–ब्रम्हके नामसे अलग रहता यह खोजकर मुझे बता पायेगा । जिसे दो जात पात अलग रहती यह भेद नही समजता वह निजनाम ब्रम्ह–माया से अलग रहता ऐसा कभी सोच नही सकता ।।।३८।।

राम नाम की टेक रे ।। सुणो जक्त के होय ।।
सामा मिलीयां सब कहे ।। भेष न केहे कोय ।।
भेक न केहे कोय ।। तको कारण सुण कांई ।।
ग्यानी सोझ बताय ।। कोण इधको यां मांई ।।
सुखराम पंथ सब भेष का ।। न्यारा कर कर जोय ।।
राम नाम की टेक रे ।। सुणो जक्त के होय ।।३९।।

सारे जगतके लोग आपसमे सामने मिलने पे रामराम कहते है परंतु भेषधारी आपस मे मिलने पे कभी भी राम राम नही कहते । जगत रामनामको बडा समजते है और भेषधारी जो संसार से अलग होकर बैरागी बने है वे आपसमे रामराम बोलते नही तो इसका क्या कारण है। इसमे बडा कौन है। यह ज्ञान सोझकर मुझे बतावो। यह एक भेषधारी रामराम नही बोलता ऐसा नही सभी न्यारे–न्यारे पंथके भेषधारी आपसमे देखके आपसमे रामराम बोलते नही। इन भेषधारीयो से संसारमे कर्म होते इसलिये संसार के सुखो का त्यागन किया है। अगर रामनाम बडा है,उससे अधिक सुख मिलते तो भेषधारी क्यो नही बोलते । ।।३९।।

बाहा गुरू नानक कहयो ।। साहेब कहयो कबीर ।।
जेन धरम बंदणा करे ।। राम की गत कहे बीर ।।
राम की गत कहे बीर ।। कोण ईध को या मांही ।।
दत्त नार्द तत्त चीन ।। ओ कियो कुछ नाही ।।
सुखराम क्हे रघुनाथजी ।। किसन कहयो क्या बीर ।।
वाहा गुरू नानक कहयो ।। साहेब कहयो कबीर ।।४०।।

गुरुनानक के पंथ मे वाहेगुरु कहते ऐसा वाहे गुरु कहके कोई गुरुनानक सरीखा मोक्षमे

गया है क्या । नही गया । तथा कबीर साहबके शिष्य साहेब साहेब कहते । साहेब साहेब कहने से कोई मोक्ष मे गया है क्या । नही गया । वंदना करने से २४ तिर्थकरो सरीखा कोई मोक्ष मे गया क्या । नही गया । इसीप्रकार संतो की रामनाम कहने की गती है । रामनाम कहने से भी आज दिनतक कोई भी मोक्ष मे नही गया । वे जिस तत्त से मोक्ष मे नही गया । वे जिस तत्तसे मोक्ष मे गये वह तुम चिनो । नानकजी,कबीरीजी,२४ तिर्थकर अधिक थे या वहाँ गुरु कहनेवाले नानकजी के शिष्य,साहेब कहनलेवाले कबीरजी के शिष्य या वंदना कहनेवाले २४ तिर्थकरो के शिष्य इनमे अधिक कौन है यह ज्ञानसे मुझे बतावो । ऐसे जगत मे अनेक माया के नाम है जिसमे तत्त नही है । दत्तात्रय,नारद,रघुनाथ,किसन इन्होने वहाँगुरु,साहेब,वंदना इन नामोका जप नही किया । इन्होने जिस नामको चिना वह तू चिन तो ही तू काल से छूटेगा ।।।४०।।

राम केहेर सत्तियां बळे ।। मोख किसी कोहो जाय ।।
ओर संत प्रहलाद ध्रुरू ।। मिले कोण पद माय ।।
मिले कोण पद माय ।। सोझ ओ अरथ बतावो ।।
रंरकार की पोंच ।। सोझ निर्णो सब लावो ।।
सुखराम बस्त गुण ना छिपे ।। खाया नर.ऊर माय ।।
राम केहे सत्याँ जळे ।। मोख किसी कोहो जाय ।।४१।।

राम राम कहके सतीयो को अग्नीडाग दिये जाता । क्या ये मोक्ष मे गयी । संत प्रल्हाद तथा ध्रुव ने रामराम किया क्या वे मोक्ष गये । सतीया तथा ध्रुव,प्रल्हाद,कौन से पद पहुँचे वह पद बतावो । ररंकार याने रामनाम की पहुँच मोक्ष तक है या नही है इसकी खोज करो और फिर निर्णय पे जावो। बिना खोज किये निर्णय पे मत जावो । मनुष्य ने कोई भी वस्तू खाई हो उस वस्तू का गुण खानेवाले के मुख से प्रगट होगा ही । वह गुण जैसे छिपता नही ऐसेही रामराम कहने से सतीया,ध्रुव तथा प्रल्हाद कहाँ पहुँचे यह छिपेगा नही ।।।४१।।

राम राम केहे मिलत हे ।। सो प्रगट कहुँ तोय ।।
गत्त मुक्त लग पहुँच हे ।। आगे पहुँच न कोय ।।
आगे पहुँच न कोय ।। बचन मानो सब आई ।।
ध्रु रटियो प्रहलाद ।। सुर्ग किऊं बेठा जाई ।।
सुखराम सत्ती सत्त बाड़ मे ।। जाय सर्ब कहूं जोय ।।
राम राम केहे मिलत हे ।। सो प्रगट कहुं तोय ।।४२।।

राम राम कहनेवाले गती तथा मुक्ती तक ही पहुँचते है,होनकालके आगे सतस्वरुप मे नही पहुँचते यह प्रगट रुपसे बता रहा हुँ । इनकी होनकाल के आगे पहुँच नही है यह मेरे वचन सभी मानो । ध्रुव और प्रल्हाद ने रामनाम रटा फिर वे स्वर्ग मे क्यों बैठे है ? प्रल्हाद इंद्र बनने के प्रतिक्षा मे बैठा है और ध्रुव वैकुंठ के सामने अढलपद संभालके बैठा है । सतीया

सत्तवाड लोक मे बैठी है । ये कोई भी होनकाल के आगे सतस्वरुप मे गये नही ।।।४२।।

सत्त बोल्याँ गत को ।। संत धरम ओ नाय ।।
जगत बरोबर संत हुवा ।। वां पकड़यो जग माय ।।
वां पकड़यो जग माय ।। संत आ टेक न धारे ।।
ओ पद के क्रतारा ।। काळ व्हेय ओई मारे ।।
सुखराम ब्रम्ह लग ठोड़ हे ।। आगे कबून जाय ।।
राम नाम सत कहो ।। संत रटे ओ नाय ।।४३।।

रामनाम सत्त है,सत्त बोल्या गत है यह मृतक को स्मशान मे जलाने ले जाते वक्त बोलते है । यह सतस्वरुपी संतका धर्म नही है । यह होनकाली संतने जिनकी पहुँच संसारी लोगोके समान होनकालतक ही थी उन्होंने पकडा हुवा धर्म है । यह रामनामका पद कर्तारका पद है । यही सृष्टी बनाता है और यही काल बनकर सृष्टी के एक एक को मारता है । ब्रम्हराम की भक्ती करके ध्रुव,प्रल्हाद,सतीया ब्रम्हके पदमे ही बैठे है आगे गये नही । आगे पहुँचानेवाला शब्द इस रामनाम से न्यारा है । वह ने:अंछर है । अखंड्ति ध्वनीस्वरुप है । वह मुखसे बोले जाता नही, कागज पे लिखे जाता नही ऐसा है ।।।४३।।

पड़े जक्त मे भीड़ ।। आण राजा के देवे।।
युं नर नारी आण ।। राम सरणो सब लेवे ।।
गत्त मुक्त को न्याव ।। ब्रम्ह सारे सुण होई ।।
ज्यूं राजा बस जहान ।। खेत घर देवे सोई ।।
ग्यान धरम ओ रिष को ।। राजा को ध्रम न्याय ।।
सुखराम मोख गुरपद मिले ।। यूं राम ब्रम्ह नही जाय ।।४४।।

राजा की सत्ता जगत के लोगो पे कष्ट पडे तो उन्हें खेत,घर,धन देने की है । जब जगत के लोगो पे कष्ट पड्ते है तब नर–नारी राजा का शरणा लेते है और राजा से अपने कष्ट का निवारण करते है परंतु बैराग्य ज्ञान सिखने के लिये जगतके नर–नारी राजाके पास नही जाते, ऋषीके पास जाते । इसीप्रकार गत मुक्त देना यह होनकाल राम के सारे है । जब नर–नारीयो पे तनके तथा मनके दु:ख पड्ते है तब जगतकी नर–नारीयाँ ब्रम्हराम राजा के शरणा लेते है और गत,मुक्त तक के सुख पाते है । गत,मुक्त के आगे के विज्ञान वैराग्य पाने के लिये जगत की नर–नारीयाँ होनकाल ब्रम्हके पास नही जाते,वे सतस्वरुपी रामके पास जाते है । होनकाल राम यह काल है तो सतस्वरुपी राम कालसे तारनेवाला असली राम है,जिसे सतगुरु कहते है ।।।४४।।

धन माल बिन काज ।। भूप की आण दिरावे ।।
कहो ग्यान के काज ।। कोण राजा पे जावे ।।
कोण राजा पे जावे ।। ज्या मोख बिध काम न काई ।।

गुर पद चाहिये सत ।। छोड हद बेहद जाही ।।
सुखराम हे अनाद रे ।। अे पद दोनूं होय ।।
अेक पद करतार रे ।। अेक गुर पद जोय ।।४५।।

धनमाल तथा धंदेमे कुछ अड्वी पडी तो राजा का शरणा लेकर राजा से छुडाते है परंतु वैराग्य ज्ञान चाहिये हो तो राजापे आजदिन तक कोई गया है क्या?वे गुरु के पास जाते । इसीप्रकार मायाके सुख चाहिये है तो होनकाल ब्रम्हके पास जाते है परंतु मोक्ष चाहिये हो तो सतस्वरुपी सतगुरुके पास जाते। सतस्वरुपी गुरुका शरणा लेने पे ही हद तथा बेहद याने मायाके ३ लोक१४भवन तथा बेहदके ३ब्रम्ह के१३ लोकोका उल्लंघन होगा और वह हंस मोक्षमें जायेगा। जैसे धन,माल तथा धंदे की अड्वी सुधारने के लिये राजा का पद है और वैराग्य पाने के लिये गुरुपद है ऐसेही त्रिगुणी माया के सुख पाने के लिये कर्तार ब्रम्हपद है और सतवैराग्य परममोक्ष पाने के लिये सतस्वरुप सतगुरुपद है। ये दोनो पद अनाद से है और न्यारे-न्यारे है ।।४५।।

भूप रेत ने खोस ले ।। भूपी दे घर खेत ।।
भोग सकळ जग भरत हे ।। कोई अन बच्चे देख ।।
कोई अन बच्चे देख ।। ब्रम्ह ब्रम्ह सकळ पुकारे ।।
जे घर छोडे खेत ।। तके नही भूपत सारे ।।
----------।।----------।।
भूप रेत कुं खोसलो ।। भूप देत घर खेत ।।४६।।

राजा ही जगत के लोगो को घर,खेत देता है तथा राजा ही घर,खेत खोस लेता है । राजा के आधारसे सकल जगत राजा के राज मे सुख-दु:ख भोगता है । इस सुख-दु:ख से राजा का कोई भी मनुष्य बचता नही परंतु जिसने राजा का खेत,घर छोड दिया है उसपे राजा की सत्ता खतम् हो जाती है ऐसेही माया के सुख चाहनेवाले होनकाल ब्रम्ह का आसरा लेते है और होनकाल ब्रम्ह की भक्ती करते है । होनकाल ब्रम्हमे के सुख-दु:खके दोनो फल है। होनकाल ब्रम्ह का भक्त काल के भय से मुक्त नही होता क्योंकी,होनकाल ब्रम्ह खुद ही काल है परंतु जिसने त्रिगुणी माया के सुख ही त्याग दिये है और ज्ञानपद धारण किया है वह ब्रम्ह के बस मे नही है इसलिये उसे ब्रम्हकाल नही घेरता ।।।४६।।

ग्यान पद ज्याँ पाविया ।। से राजा बस नाय ।।
ओर उधम सब भरत हे ।। डंड राज मे जाय ।।
----------।।----------।।
----------।।----------।।
----------।।----------।।४७।।

जैसे राजा उद्यम करनेवाले से राज मे दंड याने Tax(टॅक्स)आदि लेता परंतु जिसने उद्यम

छोड दिया है और बैरागी बन गया है और राजा के राज बस मे नही रहता इसलिये उससे दंड या टॅक्स नही लेता । इसीप्रकार जिस जिसने सतगुरु वैराग्य ज्ञानपद प्राप्त किया है वे सभी काल के दंड से मुक्त हो जाते है ।।।४७।।

|| चोपाई ||

संत सिरे आणंद पद भाई || सत्त रूप सत्तस्वरूप कहाई ||
सत्त सकळ सिर नायक होई || ओर सकळ पद मिथ्या साई ।।१।।

सत्त याने जो आदिमे भी था,आज भी है और अंतमे भी रहेगा,कभी मिटेगा नही ऐसा त्रिकाल सत तथा आनंद याने आदि से आजतक और आगे भी आनंद मे कमी नही है, अभाव नही ऐसा आनंद का पद है। श्रेष्ठ याने सभी आनंदो मे अप्रतिम आनंद है ऐसे सतरुप आनंदपद को सतस्वरुप कहते है। यह सतपद होनकाल पारब्रम्ह,त्रिगुणीमाया और जीव के उपर नायक है बाकी सभी होनकाल के पद झूठे है। बाकी सभी पदो मे जीव को जो आनंद चाहिये वह नही मिलते तथा गर्भ के,आवागमन के और काल के दु:ख नही छुटते इसकारण जीव के ठहरने के लिये ये झूठेपद है ।।।१।।

सत स्वरूप को भेद न पावे || जब लग हंसा अे पद संभावे ||
नही नही दोस हंस के माही || सतस्वरूप वो पावे नाही ।।२।।

हंस को सतस्वरुप भारी सुखो का दाता है यह भेद न होने के कारण उसे धारता नही बल्कि अग्यान वश माया के तथा ब्रम्ह के झूठे सुखो को सच्चे सुख समजकर माया के तथा ब्रम्ह के पद को ही सच्चे सुख देनेवाले है ऐसा समजता। ऐसा समजके माया तथा ब्रम्ह को धारन कर लेता उसकी ना समज होने के कारण हंस यह भूल करता इसलिये हंस मे दोष है ऐसा मत समजो। हंस को सतस्वरुप भेद मिलता नही फिर इस हंस ने करना भी क्या? ।।२।।

आतो अेक अगम गत होई || केहेण सुणण मे नही आ कोई ||
पाप पुन्न सूं कदे न पावे || धन ग्यान क्यूँ ही अर्थ न आवे ।।३।।

सतस्वरुप यह अगम है । इसे ब्रम्हा,विष्णू,महादेव,शक्ती तथा ब्रम्ह और इच्छा ये भी नही जानते। ऐसे अगम सतस्वरुप का ज्ञान संसार मे कोई कहता नही इसलिये सुनने मे आता नही। यह सतस्वरुप पाप याने निचकर्म करके मिलता नही मतलब निचकर्म करानेवाले देवता जैसे–भैरु,क्षेत्रपाल,मोगा,कालिका,सितला इनकी भक्ती करनेसे मिलता नही।(यह निचकर्मी क्यों?इन्हें मुर्गा,बकरा ऐसे निरअपराध प्राणी की बली की चाहना रहती ऐसी बली देने पे वे प्रसन्न होते।)यह पुण्य याने शुभ कर्म मतलब ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती की भक्ती करने से मिलता नही। यह सतस्वरुप धन से मिलता नही तथा वेद,शास्त्र , पुराण के ज्ञान के आधार से मिलता नही। ऐसी उसकी गती अगम याने जो साधन उपलब्ध है उस साधनो के बाहर की है इसलिये हंसो को सतस्वरुप प्राप्त होता नही ।।।३।।

तिर्थ ब्रत देव सब पुजे ।। जप तप कियाँ ही सत नही सुजे ।।
जिग कियां सुँही लेस न आवे ।। साझन कदे कोई नही पावे ।।४।।

वह सतस्वरुप तीर्थ,व्रत तथा देवता की पूजा करने से प्राप्त होता नही । वह सतस्वरुप जप, तप करने से प्रगट होता नही । वह सतस्वरुप भारी भारी यज्ञ करने से लेशमात्र भी प्राप्त होता नही तथा अनेक मायावी साधन करनेसे कभी भी किसीको भी प्राप्त होता नही । ऐसी उसकी विधी सबसे अगम है ।।।४।।

संख जोग अष्टंग सुण होई ।। पवन जोग चडावे कोई ।।
तो ही ओ भेद न पावे प्यारा ।। सत कळा को कहुँ बिचारा ।।५।।

कोई ब्रम्हा का सांख्ययोग प्राप्त कर लेता,कोई शंकर का अष्टांगयोग प्राप्त कर लेता,कोई पवन योग साध कर भृगुटी मे श्वास चढा लेता परंतु सत्तकला का प्यारा भेद ये विधीयाँ करनेवालो को भी प्राप्त नही होता ऐसे सत्तकला यह अगम विधी है ।।।५।।

गुर किरपा कर मंत्र देवे ।। सिष सब सीख धर उर लेवे ।।
आ बिध अनंत जनम लग होई ।। सत्त नाम पावे नही कोई ।।६।।

गुरु शिष्य पे कृपा करके मंत्र देता । वह मंत्र शिष्य हृदय मे धारन करता और अनंत जनम भर सिखता याने उसके उम्र मे मनुष्यो की अनेक पिढीयाँ प्रलय मे गई रहती ऐसी उसकी उम्र बढी रहती । ऐसे शिष्य को भी सत्तनाम की गती प्राप्त नही होती ।।।६।।

मुख सूं क्हे जन नाम बतावे ।। सो सिष सीख धार घर जावे ।।
भजो रात दिन रहो लिव लाई ।। सत्त स्वरूप न पावे भाई ।।७।।

संत शिष्यको मुखसे नाम बताते । वह नाम शिष्य सिखके हृदयमे धारन करता । घर जाकर रात-दिन लिव लगाकर उस नाम को भजता । ऐसी विधी की तो भी शिष्य मे सतस्वरुप प्रगट नही होता ।।।७।।

राम राम कोई आण बतावे ।। तो पण सत्त स्वरूप ना पावे ।।
सत साहेब कहे निस दिन कोई ।। अंतकाळ जासी जब रोई ।।८।।

कोई शिष्य सतस्वरुप को राम समजके राम राम यह ५२ अक्षरी शब्दो का उच्चारण करके जपता तो भी वह सतस्वरुपी राम शिष्य मे प्रगट नही होता । सतस्वरुप यह सतसाहेब याने सदा रहनेवाले है तथा सबसे बडा है इसलिये ५२ अक्षरो के शब्द से सत्तसाहेब सत्तसाहेब ऐसा जप करता फिर भी उसमे सतसाहेब प्रगट नही होता । सतसाहेब प्रगट न होने के कारण अंतकाल मे काल के मुख मे ही जाता ।।।८।।

प्रम मोख निर्भे पद गावे ।। सत साहेब क्हे कदे न पावे ।।
केहेणी सकळ झूट हे सारी ।। बाय सबद सो बके बिचारी ।।९।।

परममोख परममोख तथा निर्भय पद भजने से सतसाहेब कभी प्रगट नही होता । यह सभी शब्द भजना झूठ है । ये सभी ५२ अक्षरो के शब्द है । यह वह सतस्वरुप के ध्वनी को

जगतमे समजनेके लिये संतो ने इस्तेमाल किये हुये शब्द है । ये शब्द याने वह सतस्वरुपी संतो मे प्रगट हुई ध्वनी नही है । वह ध्वनी ५२ अक्षरो के परे है ।।।९।।

हीरा कहे मुंगिया कोई ।। निस दिन क्हेण मुख ईयाँ होई ।।
क्हो वां के घर हीरा आवे ।। तो सत साहेब क्हे वो पद पावे ।।१०।।

हिरा-हिरा या मुंगीया-मुंगीया रात-दिन मुखसे कहने से कहनेवाले को हिरा या मुंगीया मिलेगा क्या?यदि ऐसा कहनेवाले के घर हिरा या मुंगीया आता है तो सतसाहेब,सतसाहेब कहनेवाले के घट मे सतसाहेब जागृत होगा ।।।१०।।

चिंत्राँमण कूं ब्होत सरावे ।। चिंत्राँमण चिंत्राँमण गावे ।।
यूं चिंत्राँमण पावे कोई ।। तो स्मरथ कहयाँ पार तम होई ।।११।।

चिंतामण को बहोत सराया और चिंतामण,चिंतामण ऐसा रात-दिन भजा तो चिंतामण प्राप्त होगा क्या? अगर प्राप्त होता है तो समर्थ का जप करके समर्थ घट मे प्रगटा होता और तुम होनकाल से पार होते ।।।११।।

कलब्रछ कलब्रछ कहे नर नारी ।। तो क्हाँ पावे कहो उचारी ।।
जो कलपना वांरी सब जावे ।। तो सम्रथ साहेब क्हे पद पावे ।।१२।।

अगर कोई नर-नारी कल्पवृक्ष-कल्पवृक्ष करके रात-दिन जाप करते है तो उसको कल्पवृक्ष प्राप्त होता क्या?उसने की हुई कल्पना पुरी होती क्या?यदि उसके कल्पवृक्ष-कल्पवृक्ष रात-दिन जाप करने से कल्पवृक्ष प्रगट होता तो समर्थ साहेब जपने से समर्थ साहेब प्राप्त होगा । ।।१२।।

इम्रत इम्रत कहे नर सोई ।। इम्रत कहयाँ न जीवे कोई ।।
यूं मुख का नाम जाप सारा ।। मोख न पावे हे कोई बिचारा ।।१३।।

अमृत-अमृत यह जाप करके अमृत प्रगट होकर कोई अमर होता क्या? तो कोई अमर होता नही । इसीप्रकार सतसाहेब,राम,समर्थ,समर्थसाहेब यह ५२ अक्षरो मे के शब्द मुखसे जपने से कोई मोक्ष पाता नही ।।।१३।।

अमर जड़ी अमर फळ भाई ।। नित प्रत कहो मुख सें आई ।।
कहो अमर कुण हुवो जग माही । यूं सत साहेब कहयाँ ही मोख न जाही।१४।

अमरजडी-अमरजडी या अमरफल-अमरफल नितप्रत मुख से कहने पे जगत मे कोई भी अमर नही हुवा ऐसाही सतसाहेब,सतस्वरुप,समर्थ,राम कहने से कोई मोक्ष मे गया नही और जाता नही ।।।१४।।

राम कहो तो मोख न पावे ।। सत साहेब क्हे कदे न जावो ।।
समझो सकळ ग्यान कर भाई ।। सत स्वरूप नही अे माई ।।१५।।

राम कहनेसे कोई मोक्षमे नही जाता वैसेही सतसाहेब कहनेसे भी कोई मोक्ष नही जाता ।

सभी जगतके ज्ञानी,ध्यानी,नर–नारी सभी समजो । जो सतस्वरुप ध्वनीके रुपमे सतगुरुमे

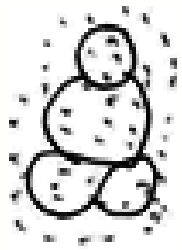

रहता वह ध्वनी इन बोलके बतानेवाले शब्दो मे नही है । वह ध्वनी सिर्फ सतगुरुमे ही रहती । वह ध्वनी ५२ अक्षरोके शब्द सतस्वरुपके स्वभावके अनुसार सतस्वरुपके लिये इस्तेमाल करनेसे उसमे नही आती । जैसे संतके देहमे सतसाहेब है । वह ध्वनी सदा रहनेवाली है इसलिये वह सत है तथा सबसे श्रेष्ठ है इसलिये साहेब है । ऐसे ध्वनी के स्वभाव के अनुसार उस ध्वनीका नाम सतसाहेब है । उसे प्रगट करना है तो सतसाहेब प्रगट हुवावा संत ही लगेगा । उसके स्वभाव के अनुसार ५२ अक्षरो के शब्द का उच्चारण करके वह सतसाहेब घट मे प्रगट नही होगा । उसे प्रगट हुयेवे सतगुरु ही लगेगे ।।।१५।।

क्हा मांग कर माया लावे ।। उधम कियाँ सुंई माया पावे ।।
सत बिग्यान कोण बिध लीजे ।। स्मझ स्मझ यो उत्तर कीजे ।।१६।।

माया माँगकर मिला सकते तथा उद्यम करके पा सकते परंतु सतस्वरुप यह गुरु से माँगके भी मिलता नही तथा मन,पाँच आत्मा तथा धन से गुरु के कार्य करने से भी मिलता नही । ऐसा सतविज्ञान सतगुरु से जिस विधी से मिलता उसकी समज घट मे लाकर वह सतसाहेब सतगुरु से अपने घट मे प्रगट करा लो ।।।१६।।

क्रणी कर माया फळ पावे ।। मुख मंत्र देवत धावे ।।
सत अण बण पाठ न कोई ।। मंत्र ग्यान ना केबत होई ।।१७।।

करणी करके माया के फल प्राप्त करते आता। मुख से मंत्र जपकर देवता को प्रगट करते आता। ऐसे सत्त का कोई मंत्र नही है,पाठ नही है,ज्ञान नही है या वह किसीके मुख के कहने मे नही है। इसकारण घट मे वह सतस्वरुप बोलने के नामो से प्रगट कराते नही । ।।१७।।

के सुखराम हाक दे भाई ।। मानो बचन हमारा आई ।।
बाणी माही राम नही कोई ।। ना साहेब सम्रथ सुण होई ।।१८।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी को ज्ञान से बजा–बजा के कहते है कि,आदि हुये वे संतो के बाणी मे तथा अभी वर्तमान मे जो संत है उनके भी बाणी मे जो सतस्वरूपी संतो के घट मे अखंड्ति ध्वनी प्रगट होती है । जिसे जगत ५२ अक्षरोमे राम,समर्थ कहते वह नही है । ।।१८।।

ओ तो अेक ग्यान सुण होई ।। ज्यू जग मे रंग राग व्हे सोई ।।
यूं बाणी बेद बिचारा ।। क्या सुर्गण क्या निर्गुण प्यारा ।।१९।।

यह बाणी संतोने जगतको शरीरके अदरके ध्वनीको वर्णन पर अक्षरोमे समजे ऐसा कथा हुवा ज्ञान है । यह ऐसी बाणी याने सुन–सुनके श्रोतावोको आनंद आयेगा परंतु यह आनंद सतस्वरुप के अखंड्ति ध्वनी का नही होता । यह आनंद जैसे जगत मे राग रागिण्या याने

गाणे सुनने पे होता उस समान रहता। यह मायावी आनंद सभी प्रकार के सरगुण तथा निरगुण और केवली संतो के वेद और बाणीयो से मिलता। केवली संतोके बाणी का आनंद सरगुण तथा निरगुण संतो के बाणी से निराला नही रहता ।।।१९।।

नट बाजीगर ख्याल बणावे ।। ब्हो बिध ख्याल सांग ले आवे ।।
देख देख सब राजी होई ।। नफो कछु नही दे धन खोई ।।२०।।

जैसे नट नाना बिधी के सोंग तथा बाजीगर नाना बिधी के खेल करता वे नट के सोंग तथा मदारी के खेल देख देखकर सभी खुश होते लेकिन देखनेवाले को नफा कुछ भी नही होता उलटा नट तथा बाजीगरो को पैसे देकर गमाता। इसीप्रकार मोक्ष सिधाये हुये केवली संतो की बाणी बाच-बाचकर तथा हर जस सुन-सुनकर जीव खुश होता परंतु जीवको सतसाहेब की ध्वनी प्रगट नही होती उलटा अमूल्य साँस गमा देता ।।।२०।।

यूं बाणी ग्यान बेद सुण भाई ।। खुसी रहो सुण जग के माही ।।
गिरे को गुन्हो बंधो सिर सोई ।। बाणी सुणे ते मुक्त नही होई ।।२१।।

इसप्रकार संतोकी बाणी ज्ञान तथा संतोका वेद सुननेसे हंस जगतमे खुश होकर रहता परंतु ये बाणीयाँ सुनके हंस कालसे मुक्त नही होता। बाणी सुन ली और हंस वैसे चला नही तो उस हंसके सिरपे परमात्माका गुन्हा बांधे जाता। जबतक बाणी सुनी नही थी तबतक उसे समर्थ साहेब क्या है यह मालूम नही था । यह समर्थ साहेब मालूम न होने के कारण हंसपे दोष नही था परंतू बाणीसे समर्थ साहेब कैसे जानना यह मालूम होनेके बाद वह वैसे संतको खोजता नही और सतस्वरुप प्रगट कराता नही तो उसके सिरो यह गुन्हा आता ।।।२१।।

क्हा सुरगुण क्हा निरगुण भाई ।। क्हा भेद सुंही भेद कहाई ।।
ओ तो अेक ग्यान सुख होई ।। नाना बिध कर सीखो कोई ।।२२।।

जैसे सरगुण और निरगुण का ज्ञान नाना प्रकार से सुना और सिखा इससे जो सुख मिला उसीप्रकार का सुख सतस्वरुपके ज्ञान सुनने पे और सिखने पे मिलता। यह सतस्वरुप का ज्ञान सुनने से माया क्या होनकाल क्या सतस्वरुप क्या यह भेद ज्ञान से शब्दरुप से समझे जाता लेकिन इस भेद के परे का कुद्रतरुप मे याने विज्ञान रुप मे सतस्वरुप प्रगट होने का भेद नही प्रगट होता ।।।२२।।

सब जंतर सब मंतर सारा ।। अे माया रूपी सरब बिचारा ।।
अे सोहं से पेदा होई ।। याँ मे प्रम मोख नही कोई ।।२३।।

सभी जंतर मंतर ये त्रिगुणी माया है। ये जंतर मंतर सोहम पिता और इच्छा माता इनके भोग से पैदा हुये है। यह माया का बीज है। यह सतस्वरुप का बीज नही है। इसकारण जंतर मंतर के साधना मे परममोक्ष नही है।।।२३।।

सब ही जाप नाम सब बाणी ।। ओंऊंकार कहे सब आणी ।।

सो सोहं से पेदा होई ।। माया मूळ आद हे ओई ।।२४।।

जगतके सभी जाप,नाम और सभी बाणी तथा ओअम् से पैदा हुए सोहम यही माया का आद मुल है,इसलिये माया से पैदा हुयेवे जाप,नाम,सभी बाणी ओअंकार यह माया है । ।।२४।।

करामात करतूत कहावे ।। सो ओऊं सोहँ कर पावे ।।
अे सब ख्याल माया सुण होई ।। घड़ भंजण माया को दोई ।।२५।।

करामात करतूत ये ओअम सोहम की भक्ती करने से जन मे आती है। उस करामात करतूत से वह जन सृष्टी को पलमे घडा देता और वही सृष्टी को पलमे मिटा देता । ये दोनो घडभंजन की करामाते माया की है। ऐसे भारी भारी चमत्कार करता या करेगा तो भी वह जन परममोक्ष मे नही जाता। उस जन मे माया के पराक्रम प्रगट हुये है,सतसाहेब प्रगट नही हुवा है और जबतक सतसाहेब प्रगट नही होता तबतक कितने भी माया के घडभंजन सरीखे भारी भारी खेल किये तो भी वह जन काल से छुटता नही ।।।२५।।

इण को ध्यान करे नर कोई ।। करणी सकळ इणी की होई ।।
मुद्रा कूंची साझन सारा ।। ध्यान ग्यान सब करम बिचारा ।।२६।।

सभी प्रकारकी करणीयाँ,मुद्रा,कुंची,साधना,ध्यान,ज्ञान,करम ये सभी ओअम सोहम से पैदा हुये है। मतलब इच्छा और ब्रम्हसे पैदा हुये है। इसकारण सभी करणीयाँ,मुद्रा,कुंची, साधना,ध्यान, ज्ञान,करम ये माया प्रगट होनेके साधन है यह सतस्वरुप प्रगट होनेके साधन नही है । ।।२६।।

जेसी करे ते सो फळ पावे ।। चमतकार बाहेर बण आवे ।।
जोत उजाळा देखे भाई ।। हीरा मूरत या तन माई ।।२७।।

यहाँ जैसे करोगे वैसा फल मिलेगा इनके योग से बाहर के चमत्कार होगे और इनके योग से शरीर मे ज्योती दिखने लगती और प्रकाश दिखने लगता,हिरे दिखने लगते और मुर्ती शरीर मे दिखने लगती ।।।२७।।

साझन करे नर दे दिखला ई ।। जे माया छाया प्रत बंब भाई ।।
आँख मूंदियाँ दीसण लागे ।। माया जाळ भ्रम का जागे ।।२८।।

कोई साध शिष्यको आँखे मुंदनेपे मायाके छायाके प्रतिबिंब दिखलाता। यह प्रतिबिंब दिखलाना मायाका जागृत हुवावा जाल है याने ही भ्रमका जागृत हुवावा जाल है। इसमे सतस्वरुप जागृत होने की विधी नही है ।।।२८।।

ध्यान कियाँ सुंई निजऱ्याँ आवे ।। सो सब माया चेन कवावे ।।
रज मातर मूरत कण होई ।। तब लग ब्रम्ह हे नही कहुँ तोई ।।२९।।

ध्यान करने पे रज मातर मूर्ती भी ध्यान मे दिखती है तो समजना वह त्रिगुणी माया के चरीत्र है । तबतक सतस्वरुप तो दूर ब्रम्ह भी नही मिला ऐसे समजना ।।।२९।।

ब्रम्ह कळा सोई केहतन आवे ।। ना मूरत ना ज्योत कहावे ।।
ना कछू आवाज उजाळो होई ।। ना रंग रूप क्हेण नही कोई ।।३०।।

मायाके चमत्कार,मुरत,ज्योत,आवाज,उजाला,रुप,रंग,यह ब्रम्हकलाके लक्षण नही है,यह माया के लक्षण है। खुद पारब्रम्ह यह अमुरत है। पारब्रम्हको खुदका प्रकाश नही,खुदका आवाज नही,खुदका रुप नही,खुदका रंग नही,खुदकी मुरती नही,खुदकी ज्योती नही । ऐसे पारब्रम्हकी ब्रम्हकला यह ब्रम्हज्ञान रुपमें प्रगट होती वह आँखोसे दिखनेवाली,कानोसे सुननेवाली वस्तूवोसे प्रगट नही होती। ब्रम्हकला यह मायासे बताये नही जाती । वह सिर्फ ज्ञानसे समजे जाती। वह मायाके चमत्कार चरीत्रोसे न्यारी है। जबतक साधूको मुरत, ज्योत,आवाज,उजाला,रुप, रंग दिखता तबतक उस साधू को ब्रम्हकला प्रगट हुई नही यह समजना ।।।३०।।

प्राब्रम्ह के रूप नही कोई ।। ना कळ तोल मोल नही होई ।।
जिण ऊपर सत्त सब्द बिचारा ।। वो सुण देस ब्रम्ह सेंई न्यारा ।।३१।।

पारब्रम्हको मायाके समान रुप,रंग नही है। इसलिये पारब्रम्हके कलाको मायाके ज्योत, उजाला,आवाज,रंग,रुप से तोलमोल नही करते आता। सतशब्द का देश यह पारब्रम्ह के भी उपर है । जब जगत तथा ज्ञानी,ध्यानीयो को पारब्रम्ह का तोलमोल नही समजता तो पारब्रम्ह के आगेके सतशब्द का तोलमोल मुख के शब्दो से या मायाके लक्षणो से कैसा समजेगा?।३१।

सब्द केहेर कोई जुक्त बतावे ।। ने: चो पकड़ सत्त पर लावे ।।
जो बिश्वास सब्द मे बोले ।। ताँ ऊपर करणी तोले ।।३२।।

संत धाम पधार गये। संत जब धरा पे थे तब शिष्योको सतशब्द समजना चाहिये इसलिये माया के भाषा मे सतस्वरुप की बाणी कथी। संतो की बाणी माया होने के कारण संतो के साथ नही जाती इसलिये वह जगत मे ही रहती। बाणी मे संतो ने मोक्ष मे जाने की युक्ती बतायी रहती। पिछे कोई साधक बाणीके शब्द बाच-बाचकर बताये हुये विधीपे दृढ विश्वास रखकर साधना करता। अपने मनको तथा तनको बाणीजीमे बताये अनुसार तोलमोलके रखता। मन मे निश्चल होकर जगतके दुजे कोई मतमे नही जाता। संतको सत पकड्के संतके ही मतमे रहता । इतना करने पे भी उस संतमे सतशब्द प्रगट नही होता । ।।३२।।

सब्द कहे म्हे तारूँ सोई ।। जो बिश्वास हमारो होई ।।
ने: चो पकड़ ना डोले भाई ।। तो प्रम मोख ले जाऊँ आई ।।३३।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज जगत को कहते है बाणी मे कथा हुवा ज्ञान सब सत्य है । जब शरीर से संत थे तब संत घट मे के सतशब्द के आधार से जगत को समजे ऐसा ज्ञान कथ रहे थे । संत ने ज्ञान कथा कि,जो मेरे पे निश्चल होकर विश्वास रखेगे और

माया के तथा ब्रम्ह के भक्तीयो के घेरे मे नही जायेंगे उनको सबको मै तारुँगा और जिसने जिसने निश्चल होकर संत पे विश्वास रखा और माया तथा ब्रम्ह के घेरे मे नही डोले वे सभी संत के मौजुदगी मे मोक्ष गये ।।।३३।।

आ सत्त बात असत नही कोई ।। पण सबद कहयो ताँ दिन सत्त होई ।।
अब ओ सब्द मिथ्या होई ।। कहयो जके नही जगमे कोई ।।३४।।

यह तारने की संत की बात सत्य है,झूठी नही है। यह तारने के शब्द जिस समय कथे थे तब वह सत्य थे। आज यह कथे हुये शब्द तार नही सकते क्यों कि,जिस सत्ता के आधार से संत तार रहे थे वह सतकला कथे हुये बाणीमे नही रही वह संतो के साथ चली गयी । ।।३४।।

देणी चीज कही थी भाई ।। से बंदा सुण गये सिधाई ।।
क्हो वां चीज कहाँ सुं लावे ।। सब्द रत्ति वां के संग जावे ।।३५।।

एखादा भाग्यरती पुरुष जगत मे रहता। वह पुरुष जबतक जगत मे रहता तबतक वह जिसे-जिसे जो-जो चीज चाहिये वह चीज देना कबूल करता और वैसे उनको वह चीज देता। उम्र होने पे वह तन छोडता उस कारण वह भाग्यरती पुरुष के साथ चले जाती। इसकारण पिछे कुटूंबवालो के पास रती नही रहती। अब पिछे कुटूंब परीवार के लोग किसी को कुछ देना चाहे तो वे रती न होने के कारण दे नही सकते। इसीप्रकार संत के पिछे संत की बाणी रहती परंतु वह बाणी किसी को भी शब्द प्रगट नही करा सकती कारण शब्द कथनेवाले संत के साथ सतशब्द की सत्ता चली गयी रहती। उस शब्द की सत्ता बाणी मे नही रहती ।।।३५।।

नाँव पुर्ष का हे जग माँही ।। बाताँ अरथ तके सब याँही ।।
लेण देण कीया बोहारा ।। उण समी ये सब सत्त पियारा ।।३६।।

भाग्यरती जाने के बाद जगत मे उसका नाम,उसकी बाते,उसके प्रती समज जैसे के तैसे रहती परंतु लेने-देने के व्यवहार नही रहते। वे लेने-देने के व्यवहार वह जिवीत था तबतक ही थे। अब वे बंद हो गये। जैसे भाग्यरती का नाम,बाते,पराक्रम उसके जाने के बाद जैसे के वैसे रहता परंतु वह जब था वैसा व्यवहार उसके जाने के बाद नही चलता इसीप्रकार सतस्वरुपी संत का नाम,पराक्रम,बाते उसके जाने के बाद भी जगत मे जैसे के तैसे रहती परंतु शिष्य मे सतस्वरुप प्रगट करा देने की सत्ता पिछे नही रहती ।।।३६।।

भाग पुर्ष सुण जग मे आई ।। कीयो नांव जक्त के माई ।।
जिण कूं चीजां देणी कीवी ।। वाँ कूं माया ब्हो बिध दीवी ।।३७।।

भाग्य पुरुष जगत मे आया । जगत मे आकर जगत के लोगो को जो जो चीज देनी कबूल की वे सारी नाना प्रकार की चीजा और माया दी और अपना भाग्यपुरुष ऐसा नाम रोशन करके चला गया ।।।३७।।

लारे कोई चलाई चावे ।। तो द्रब चडावे क्हाँ सुं लावे ।।
भाग रत्ति गई जे संग भाई ।। बचन स्वाल रहे जग के माई ।।३८।।

भाग्यपुरुष का शरीर छुट गया । उसके साथ भागरती चले गयी। उसके वचन,सवाल,नाम पिछे जैसे के तैसे रह गये। उसके बचन तथा उसने पाया हुवा नाम बना रखने के लिये उसके वंशज का कोई पुरुष वह रीत चलाना चाहेगा तो भी वह कैसे चलायेगा?वह रीत चलाने के लिये धन–दौलत चाहिये । वह धन–दौलत पिछेवालो के पास है नही फिर जिसे जिसे जो जो चीज चाहिये वह देने के लिये वह धन–दौलत कहाँ से लायेगा? ।।३८।।

यूं बचन सवाल जन का सब सारा ।। से देह थकाँ सत्त सब प्यारा ।।
अब वाँ चीज न पावो कोई ।। सोभा सुणर खुसी रहो सोई ।।३९।।

ऐसेही संतो के बचन और सवाल संत देह मे थे जब थे तब सही थे। संत देह छोड्नेके बाद संत के साथ सत्ता चली गयी और अब वे ही बचन तथा सवाल अमरलोक प्रगट करने के लिये झूठे है। उन बचनो का पराक्रम याने शोभा सुनकर जगत उन बचनो का आनंद ले सकता परंतु उससे किसीको भी अमरलोक नही मिलता ।।।३९।।

क्हे सुखराम बाद नही कीजे ।। गम कर ग्यान सोझ उर लीजे ।।
जिण जन पंथ चलाया जूवा ।। वे अे सो कहो पछे कै हूवा ।।४०।।

पहुँचे हुये संतके पिछे उस संतके नाम पे कुछ लोग पंथ चलाते है । ऐसे पंथवालो को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहाँ कि आप जिस संतका पंथ चला रहे है उस पंथमे आज सत्ता नही है। वह सत्ता जब संत गये उस वक्त उनके साथ चले गयी तब वे वाद करते है उसपर ऐसे वाद करनेवालो को आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने कहाँ कि झूठा वाद मत करो। ज्ञान से सही समज हृदय मे लावो और देखो जैसे तुम्हारा पंथ है वैसे और भी अन्य केवली संतोके पंथ जगत मे है। अगर उन केवली संतोके पंथ मे अमर लोक जाने की रीत उनके जाने के पश्चात आज भी जिवीत है तो तुम्हारे पंथ से भी अमरलोक जाते आयेगा। ज्ञान से देखोगे तो समजेगा की उनके पंथ मे अमरलोक जाने की रीत नही रही। जब उनके पंथ मे परमपद जाने की रीत उस संत के जाने की रीत उस संत के जाने के पिछे रही नही तो तुम्हारे पंथ मे कैसे रहेगी? इसका वाद न करते हुये ज्ञान से सोच करो ।।।४०।।

क्हे सुखराम न्याव हम कीयो ।। भ्रम भांज हंसन को दीयो ।।
न्हे चळ हुवाईं मोख नही पावे ।। रखे बिश्वास पार नही जावे ।।४१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने वाद करनेवाले को तथा जगतके हंसोको जगतके अनेक दाखले बताकर समजाया कि गये हुये केवली संतो के वचनोपर विश्वास रखकर तथा निश्चल होकर आज दिन तक कोई अमरलोक गया नही और आगे कोई जायेगा नही । जगत के ज्ञान से न्यायीक दाखले देने के कारण वादी पुरुष का और हंसो का भ्रम नाश

हुवा ।।।४१।।

अनंत करे कळ किमत लावे ।। ताही सत स्वरूप की कळा न पावे ।।
क्हे सुखराम सुणो सब ग्यानी ।। मान सके जे मानो आनी ।।४२।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी ज्ञानीयो को कहते है कि,मन की,तन की,माया की,ब्रम्ह की तथा मोक्ष पधारे हुये संतो के बाणी अनुसार की अनंत क्रिया नाना प्रकार के हिकमत से की तो भी सतस्वरुप की कला घट मे प्रगट होगी नही। मेरे इस ज्ञान से किये हुये न्याय को जो मान सकते वे मेरी बात मानो ।।।४२।।

प्रम मोख अे बात न पावे ।। करणी क्हैण सुणण मे आवे ।।
अे तो सकळ की मतारे भाई ।। माया पकड़ करो बस काई ।।४३।।

परममोक्ष इस पहले के पंथ के बाणी के बातो से मिलेगा नही। जो ज्ञान करने मे आता, बताने मे आता,सुनने मे आता वह ज्ञान ने:अंछर ध्वनी की सत्ता नही रहती। ये मतसे ही पकड्कर रखी हुई मायावी सभी बाते रहती। इन मतोसे माया वश मे आकर पकडे जाती । ।।४३।।

हुवे प्रगट मुख आगल आवे ।। जो चावे सोई चेहेन बतावे ।।
सत्त सब्द कूं ले किम कोई ।। केण सबद मे लेसन होई ।।४४।।

वह माया वश होकर प्रगट होगी और वह मुख के सामने आ जायेगी। जो चाहिये वह चरीत्र वह माया करके बतायेगी परंतु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि इन बताते आनेवाले शब्दो मे सतशब्द का लेस भी नही है फिर इन बताते आनेवाले शब्द से जीव सतशब्द कैसे प्रगट करा सकेगा? ।।४४।।

सत्त साहेब अजरावण होई ।। अे सिंव्रण करे नार नर कोई ।।
सच बिश्वास सत्त पर राखे ।। मिथ्या बचन भूल नही भाखे ।।४५।।

ऐसे गुरु के कहने से कुछ नर-नारीयाँ सत परमात्मा पर विश्वास रखते और मुखसे असत्य वचन भुलके भी नही बोलते तथा सदा सतसाहेब,अजरावण इसका रात-दिन स्मरण करते और सतसाहेब प्रगट हुवा ऐसा समजते ।।।४५।।

तो पण हंस मोख नही जावे ।। उलटो जनम धरे दु:ख पावे ।।
ज्यूं सत आयाँ बिन जळी न कोई ।। बाताँ कियाँ बिगोवो होई ।।४६।।

यह सब करने पे एक भी नर-नारी को सतसाहेब प्रगट होता नही। उस कारण एक भी नर-नारी का हंस मोक्ष मे जाता नही। उलटा वह जगत मे जनम धारण करता और काल के दु:ख भोगता। जैसे-स्त्री मे सत्त आया नही और जगत मे सत्त आया करके बाता की। जलने का समय आया तो घट मे सत्त प्रगट न होने के कारण जल नही सकी। सत्त आये बिना सती होने की बात कर ली और सती बनी नही इस बात से जगत मे थट्टा, फजीती,बेअब्रु हुई । ।।४६।।

सत्ती होण की बाताँ कीवी ।। जब जग पदवी मान सुण लीवी ।।
पछे जळे नही जे जाई ।। तो हाँसी करे सकळ जग माई ।।४७।।

स्त्री ने सती होने की बाता की जगतने भी उस स्त्री मे सत्त प्रगट हुवा करके मान लिया। अब पतीका शरीर छुटा। पतीके पिछे उसमे सत न आने के कारण वह जली नही तब सभी जगत ने उसकी हँसी,मजाक,थट्टा की ।।।४७।।

यूं सत आयाँ बिन क्हे सत काँई ।। मै सती पीव संग हुँऊं जग माँई ।।
तो झूटी जळ्यो ना जावे कोई ।। युं सत साहेब क्हे मोख न होई ।।४८।।

जैसे स्त्रीने सत आया बिना ही जगतके लोगोको कहाँ कि मुझमे सत्त आया है। मै पतीके साथ सती होउँगी। मै पतीके साथ सतवाञ्मे जाउँगी ऐसे कहते रही। एक दिन पतीका शरीर छुटा। सती होनेका योग आया अब घटमे सत्त तो प्रगट नही था और जगतमे मुझमे सत आया ऐसा झूठा बताते गयी। पती के साथ सतवाड के लोक मे जाना है तो पती के साथ जलना पड्ता। शरीरमे सत आया नही था इसकारण वह पतीके साथ जल नही पायी इसलिये पती के साथ सतवाञ्के लोक मे जा नही पायी। इसीप्रकार सतसाहेब सतसाहेब करके सतसाहेब प्रगट हो गया ऐसा जगतमे बताते गये। अंतीम समय आया सतसाहेब घटमे प्रगट नही था उसकारण अमरलोक तो जाना हुवा नही बल्कि जगत मे जनम धारन करके दु:ख पाना पडा। ।।४८।।

सत साहेब जब साचा भाई ।। सता सत्त की प्रगटे आई ।।
और सकळ हे को गति यारा ।। ज्युं सती संग हुवे लोक बिचारा ।।४९।।

मुखसे बोलनेवाले सतसाहेब समर्थ ये शब्द सच्चे नही है। ये माया के शब्द है। ये सतसाहेब तो तब सच्चा है जब वह सतसाहेब घटमे सत्ताके रुपमे प्रगट है बाकी सभी सतसाहेब कहनेवालो मे सतसाहेब सत्ताके रुपमे प्रगट हुवा नही रहता। जैसे सती स्त्री सती होने जाती तब कई स्त्रीयाँ तमाश देखने जाती,देखनेवालो मे से एक भी स्त्रीमे सती स्त्री सरीखा सत्त प्रगट हुवा नही रहता परंतु वहाँ कुछ स्त्रीयाँ मुझमे भी सत्त प्रगट हुवा है ऐसा झूठा ही कहते है। इसीप्रकार यह सतसाहेब कहनेवालो की स्थिती रहती । इनमे कबीरजी,दादुजी,दर्यावजी महाराज सरीखा सतसाहेब प्रगट नही हुवा रहता परंतु उनका ज्ञान बाचकर और सुनकर हमारे मे भी सतसाहेब प्रगट हुवा ऐसा कहते रहते ।।।४९।।

यूँ सत साहेब सब को नर नारी ।। मोख न जावो अेक बिजारी ।।
नर के संग जळी जा जाई ।। जिण मे सत प्रगटी ही आई ।।५०।।

मोक्ष तो वही जायेगा जिसमे सतसाहेब प्रगट हुवा है। जैसे नारी मे सत प्रगट हुवा नही वह पती के संग जलने जाती नही। जबकी जिस नारी मे सत्त प्रगट हुवा है वह अपने पती के संग जलने जाने मे कोई कसर नही रखती बराबर जलने जाती वैसेही सतसाहेब सतसाहेब सभी नर–नारीयाँ रात–दिन भलाई जपे परंतु उस जपने से सतसाहेब एक भी नर–नारी

के घट मे प्रगट होता नही इसलिये एक भी मोक्ष मे जाता नही ।।।५०।।

ओर सकळ बस्ती संगे जावे ।। उलटा सकळ घरे चल आवे ।।
यूं सत सत्त कहयाँ मोख नही होई ।। नांव प्रगटे ज्याँ सत्त सोई ।।५१।।

बाकी बस्तीकी सभी स्त्रियाँ तथा पुरुष सतीके साथ अग्नीडागके जगहतक चलते। अग्नीडाग देनेके बाद सब लोग पलटकर अपने अपने घर वापस आते। ऐसाही सत सत कहने मोक्ष नही होता। वह सत प्रगट हुवा तो ही मोक्ष होता नही तो जगत मे फिरसे जनम धारन करता । ।।५१।।

के सुखराम मां भूलो कोई ।। मुख की क्हेण झूट सब होई ।।
मंत्र सीम्रण जप सार ।। कल मुद्रा बिस्वास बिचारा ।।५२।।

इसप्रकार संत को राम याने परमात्मा मिला है वे कैसे पहचानते वे सभी सच्चे चिन्ह मुझे बतावो । जगत उस मनुष्य के घट मे राम प्रगट होने के कारण संत समजते वह कैसे समजते ऐसे सभी सच्चे चिन्ह मुझे और जगत को बतावो ।।।५२।।

|| कुंडल्यो ||

जब गणेस क्हे गुर देवजी ।। कियो न्याव सत्त छाण ।।
अब कीरपा करके आ कहो ।। मोख जाय किम प्राण ।।
मोख जाय किम प्राण ।। बिध तम अेक न राखी ।।
सुणण कहण प्रत ध्यान ।। जोत मिथ्या कर भाखी ।।
जिण जिण बिध हंस पहुँच सी ।। सोही बिध कहीये आण ।।
जब गणेस कहे गुर देवजी ।। कियो न्याव सत्त छाण ।।५३।।

तब गणेश व्यास ने आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज से कहाँ कि,आपने सत्त का न्याय किया । अब कृपा करके यह बतावो की प्राण मोक्ष मे कैसे जायेगा? आपने जगत की एक भी विधी रखी नही । सुनना,बताना,प्रतिमा,ध्यान,ज्योती यह सब झूठे करके बताये । अब जिस–जिस विधीसे हंस अमरलोक पहुँचेगा वह सब विधी लाकर बतावो ।।।५३।।

|| चौपाई ||

धन तो ब्होत स्हा घर होई ।। चाकर हकम राजा के सोई ।।
प्रचा ब्होत देव सो देवे ।। मन की जाण साणी लेवे ।। ५४।।

धन सावकार के घर बहोत रहता । इस बहोत धन के गुण से वह मनुष्य सावकार है यह समजता। चाकर तथा हुकूम बजानेवाले राजा के यहाँ बहोत रहते इस गुणसे राजा पहचानते आता। पर्चे चमत्कार देव बहोत देते उस गुण से देवता पहचाने जाता। शगुन समजनेवाला मन की बात जान लेता इस गुण से शगुनी पहचानते आता ।।।५४।।

अब राम मिल्याँ सुं का गुण होई ।। सो सत्त चेन बतावो मोई ।।
इस कूं राम मिल्या जग जाणे ।। कहो क्या देख रूं संत बखाणे ।।५५।।

परंतु राम मिलने से इनके सिवाय क्या जादा गुण होगा,वे सब सच्चे चेन(चिन्ह)(निशाण)

मुझे बताओ कि इसे राम मिला है। ऐसे सब जग जानेगा और उस संतके क्या चिन्ह (निशानी)देखकर यह संत है ऐसा वर्णन करो ।।।५५।।

बाणी कहे क्हे कवेसर भाई ।। जिण घट क्हे सरसती आई ।।
अगम निगम का अर्थ बतावो ।। सो चारण भाट सोझ सब लावे ।।५६।।

कवेश्वर कविता करते तो उनके घटमे सरस्वती आयी ऐसा कहते। जैसे कवेश्वर कविता गाते वैसेही चारण भाट गाते और अगम निगम का अर्थ बताते परंतु चारण भाट मे सरस्वती प्रगट हुई ऐसा कोई नही कहता ।।।५६।।

अनहद नाद घुरे सोही माया ।। उलट चड़े सोई आतम भाया ।।
प्रत बंब पाँचू रंग होई ।। ध्यान धर रूं देखे नर कोई ।।५७।।

किसीके शरीरमे अनहद घुरता है। किसीके शरीरमे आत्मा उलटकर चढती है। कोई पुरुष ध्यानमे पाँचो रंग देखता यह सभी आपके कहनेसे माया है फिर राम मिलनेकी खुन क्या है? ।।५७।।

नेण मूंद कोई मूरत जोवे ।। तो प्रतिबंब थूळ को होवे ।।
दासा तन गहे नर कोई ।। तो कंगाल ब्होत जग होई ।।५८।।

आँखे बंद करके कोई मूर्ती देखता तो कोई स्थूल शरीर का प्रतिबिंब देखता परंतु आपके कहने से ये सभी माया है । ये राम नही है । तो संत में राम प्रगट हुवा यह जगत ने कैसा जानना?दासातन करनेवाले को राम मिला है ऐसा समझते तो जगतमें कंगाल बहोत है मतलब दासातन करनेवाले को भी राम मिला नही ।।।५८।।

मस्त मान अभ मान न राखे ।। पाँचूं भोग प्रख नही चाखे ।।
तो बेड़ा सुणो ब्होत जग होई ।। मुरख तके ना समझे कोई ।।५९।।

कोई ज्ञानमे मस्त रहकर मान और अभिमान रखता नही तथा पाँचो इंद्रियोके(शब्द, स्पर्श,रुप,रस,गंध)भोग बिना परखे ही चाखता। इनको राम मिला है ऐसा माने तो जगत मे पागल तथा मूरख बहोत है वे भी मस्त रहते। मान अभिमान नही रखते और इंद्रियो के भोग बिना परखे ही लेते । इसका अर्थ ज्ञान से मान अभिमान नही रखता और पाँचो भोग बिना परीक्षा से लेता उसे भी राम मिला नही ।।।५९।।

अब क्हो जी राम कोण बिध भाई ।। ता मिलिया सो प्रखो आई ।।
सो तम चेहेन कहो सुझ आई ।। राम कोण बिध जाणो भाई ।।६०।।

तो अब जिसे राम मिला है उसे परखने की विधी कहो। उस संतको राम मिला है वे सभी चेन मुझे समजे ऐसा बतावो ।।।६०।।

ज्हाँ जो पूंछ प्राक्रम होई ।। सो परसे माया क्हुँ तोई ।।
छोटी बड़ी कळा सों कुहावे ।। गेब अचानक प्रगट आवे ।।६१।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज गणेश पंड्तिको कहते है कि,छोटी–बडी कलाको लेकर

तो गेबसे अचानक प्रगट होनेवाले सभी कलाये माया है। यह साधूके मायामे पहुँच तथा पराक्रम प्रगट होनेवाली कलासे लेकर तो छोटे–बडे कलातक सभी माया है यह राम नही। ।।६१।।

अब तम चीनो राम कोण बिध आणी ।। सो मत तुमरा कहो बखाणी ।।

अब तुम ही पहचानो, राम किस विधी मे है, वह सब तुम्हारा मत बतावो ।।

इन सब कला को ध्यान में रखकर राम मिला यह तुम ही पहचानो व तुम्हारा मत बतावो।

।। इति सत्त स्वरूप आनंद पद ने: अंछर निज नाव ग्रंथ सम्पुरण ।।